RNI No. : UPHIN-2009/29369

डाक पंजीकरण : KANPUR HO/002/2022-24
प्रधान डाकघर कानपुर-डाक प्रेषण दिनांक 29/30

वार्षिक सदस्यता शुल्क 100/-

द्रविड़ भारत

www.dbindia.org.in

सामाजिक परिवर्तन का मासिक पत्र

मई-2023 | वर्ष - 15 | अंक : 04 | मूल्य : 5/-

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

सम्पादकीय

RNI No. : UPHIN-2009/29369

संपादक : उमेश्वरी देवी, मो.: 9005204074
संरक्षक मण्डल : मा. रामदीन अहिरवार (महोबा), मा. राम अवतार चौधरी (सहा.अभि. जलकल विभाग), मा. छविलाल वर्मा (चरखारी), मा. हरिनाथ राम (दिल्ली), मनीष कुमार मो. 9415053621
राज्य ब्यूरो प्रमुख उत्तर प्रदेश :
सुनील कुमार, ढेलवा, गाजीपुर (उ.प्र.), मो.: 9935363730, 9170836363
योगेन्द्र कुमार (ब्यूरो चीफ चित्रकूट मण्डल) मो.: 8299162841
हमीरपुर ब्यूरो प्रमुख - रघुवर प्रसाद, मो.: 9793739030
क्षेत्रीय सम्पादकीय कार्यालय :
40/69, डी-5, श्यामलाल का हाता, परेड, कानपुर (उ.प्र.), मो. : 8756157631
ब्यूरो प्रमुख लखनऊ मण्डल :
राजकुमार, उन्नाव
मो.: 9889273743, 9392660070
हरियाणा राज्य :
डा. रमेश रंगा, ग्राम-सराय, औरंगाबाद, पो.-बहादुरगढ़,जिला-झज्जर (हरियाणा),09416347052
कानूनी सलाहकार : एड. रामप्रकाश अहिरवार, एड. यू.के. यादव, मोती लाल वर्मा, एड. विजय बहादुर सिंह राजपूत, एड. रमाकान्त धुरिया, रामऔतार वर्मा, एड. सुशील कुमार, कानपुर
मध्य प्रदेश राज्य : पुष्पेन्द्र कुमार
कार्यालय : ग्रा. व पो.-रामटौरिया, जिला-छतरपुर
छत्तीसगढ़ राज्य : ब्यूरो प्रमुख
रमा गजभिये, मो.: 7828273934
दिल्ली प्रदेश : C/o अनिल कुमार कनौजिया C-260, हर्ष विहार, हरिनगर एक्सटेंशन पार्ट-III, बदरपुर, नई दिल्ली-44, मो. : 09540552317
राजस्थान राज्य : रघुनाथ बौद्ध, श्याम रघु फुट वियर, दुकान नं.-1, गणेश मार्केट, पुलिस चौकी के सामने, अलवर, जिला-अलवर-301001,
मो. : 09887512360, 0144-3201516
बाबूलाल बौद्ध, अलवर, मो.-08058198233
संपादकीय/विज्ञापन प्रसार/पंजीकृत कार्यालय :
ग्रा व पो.-रिवई (सुनैचा), जिला-महोबा (उ.प्र.)
मो. : 9005204074, 8756157631
E-mail : dravinbharat1@gmail.com
प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी
उमेश्वरी देवी द्वारा ग्रा. व पो.-रिवई (सुनैचा), जिला महोबा से प्रकाशित व श्रेय ऑफसेट प्रा. लि., 109/406, नेहरू नगर, कानपुर, 84/1, बी, फजलगंज, कानपुर से मुद्रित

प्रकाशित पत्रिका में प्रकाशित लेख, सामग्री, में संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। इसमें किसी भी प्रकार का दावा या विचार मान्य नहीं होगा। लेख के विवादित होने पर लेखक ही उत्तरदायी होगा समस्त विवादों का निपटारा महोबा न्यायालय में होगा पत्रिका का संपादन एवं संचालन पूर्णतयः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक है।

मिशन को बढ़ाने के लिए सहयोग करें -
भारतीय स्टेट बैंक, शाखा-पी.पी.एन. मार्केट, कानपुर
खाता सं.-33496621020 • IFSC CODE-SBIN0001784

बुद्ध जयन्ती पर विशेष महामानव गौतम बुद्ध

सभ्यता के आदिकाल से ही सत्य की खोज हमारे महानपुरुषों के लिए चिन्तन का विषय रहा है, किन्तु वास्तव में सत्य क्या है ? आज भी तत्सम्बन्ध में चिंतनशील प्रयास जारी है। लगभग 2500 वर्ष पूर्व गौतम बुद्ध ने सत्य की खोज में अहिंसा का सूत्रपात किया था, लेकिन सत्य की खोज में इस संघर्ष को उन्होनें मानवीय दुःखों एवं उनकी सामाजिक आर्थिक और राजनैतिक समस्याओं के समक्ष बहुत अल्प समझा। गौतम बुद्ध मातृभूमि पर मानवता के मध्य फैली हुई अस्तित्व की लड़ाई एवं अन्तहीन समस्याओं को सदा के लिए खत्म करने के लिए रास्ते की खोज में निकल पड़े थे। उन दिनों वैदिक कर्मकांड, जातिभेद, हिंसा तथा द्वेष का बोलबाला था। सामंती ताकतें अपनी चरम सीमा पर थी। गौतम बुद्ध ने समस्त राजशाही सुखों को त्याग कर सत्य, अहिसा और भाईचारे का आदर्श पथ ढूंढ़ निकाला, जिससे समस्त विश्व लाभान्वित हुआ। बुद्ध की इस महान मानवतावादी विचारधारा ने मानव जाति को अपने चहुमुखी विकास की दिशा में अत्याधिक सफलता प्रदान की। इस तरह गौतम बुद्ध का भारतीय मानव सभ्यता, सांस्कृतिक विकास, धार्मिक परिवर्तन एवं ऐतिहासिक निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान रहा।

शाक्य राज शुद्धोदन के पुत्र गौतम बुद्ध का जन्म लगभग 650 ई. वर्ष पूर्व लुम्बनी नामक वन में ऐसे समय हुआ, जब उनकी माता महामाया अपने प्रसवकाल के कुछ समय पूर्व कपिल वस्तु से अपने मायके "देवदह नगर" जा रही थीं। शिशुकाल में सिद्धार्थ अत्यन्त दूरदर्शी थे। भविष्य वक्ताओं ने उनके पूर्ण गुण सम्पन्नता की पुष्टि करते हुए बताया कि बालक महापुरूष होने का यश प्राप्त करेगा। पिता का "गौतम गोत्र होने के कारण उनका नाम गौतम तथा सत्य का बोध (ज्ञान) प्राप्त होने के फलस्वरूप गौतम बुद्ध पड़ा। विचारशील गौतम बुद्ध सदैव सांसारिक मानस पीड़ा एवं उसके निवारण के सम्बन्ध में सोचते रहते थे। बुद्ध की वैराग्य पूर्ण भावनाओं को देखकर पिता ने अठारह वर्ष की आयु में उनका विवाह कोलि वंशी राजा दण्डयाणि की पुत्री यशोधरा से कर दिया। पिता की अभिलाषा थी कि गौतम बुद्ध सांसारिक वैवाहिक सूत्र में बंधकर वैराग्य की भावना को त्याग कर देगा, जिससे शासन और वंश वृद्धि जैसी दोनों इच्छाओं का समाधान सम्भव हो जायेगा, किन्तु समय कुछ और परिवर्तन चाहता था। पिता की इच्छानुसार घर में गौतम बुद्ध से संतान का जन्म तो हो गया, किन्तु पिता की दूसरी इच्छा पूर्ण न हो सकी। नवजात शिशु का 'राहुल' नाम रखा गया।

एक दिन पिता शुद्धोदन ने गौतम बुद्ध को वैराग्य सम्बन्धी समस्याओं से अवगत कराया। बहुमूल्य वस्तुओं को लालच दिया, यहां तक कि उनका विवाह भी कर दिया था। पिता की गम्भीर चेतावनी के उपरान्त भी गौतम बुद्ध की वैराग्य स्थिति में परिवर्तन न हो सका। वह पिता के चरणों में मस्तक झुकाते हुए कहने लगे "राजन मुझे खुशी सहित सन्यास लेने की आज्ञा दीजिए, क्योंकि एक दिन मुझे आपसे भी वियोग पाना है। अतः जब आपसे भी वियोग निश्चित है तो धर्माचरण के लिए आप से विमुक्त होना अत्यन्त श्रेष्ठ होगा।" उन्होंने पुनः आग्रह कर पिता से कहा कि - "यदि आप चार परम सत्यों से मेरा बचाव कर सकें तो, मैं वैराग्य का त्याग कर दूंगा।"

1. मेरा शरीर मृत्यु को प्राप्त न हो।
2. व्याधियां (रोग) मेरे शरीर को क्षीण न करें।
3. आयु के बढ़ते हुए मेरी युवावस्था विक्षिप्त न हो।
4. सांसारिक विपत्तियां मेरी सम्पत्ति का विनाश न करे।

उपरोक्त कटु सत्य के समक्ष पिता के पास जवाब न रहा, और उन्होंने पुत्र इच्छा को समर्थन दे दिया। एक दिन वैराग्य की अत्यधिक सोच ने गौतम बुद्ध को मानवांच्छित मंजिल की ओर मोड़ दिया और वह उन्नीस वर्ष की अवस्था में ही ग्रह त्याग कर परम शांति की खोज में बहुत दूर निकल गए। उन्होंने ज्ञानार्जन के लिए अनेक ब्राह्मणों तथा वैराग्य विवेकियों से चर्चायें की, किन्तु उन्हें पूर्ण संतुष्टी प्राप्त न हो सकी, और आगे चल दिये। गौतम बुद्ध ने बोध गया के वट वृक्ष के नीचे लगभग एक सप्ताह तक ध्यान मग्न रहने के उपरान्त "बोध सत्व" प्राप्त हुआ। गौतम बुद्ध जीवन सत्य जान गए। उन्होंने बताया कि

(क) संसार दुखमय है।
(ख) कष्ट, शोक, मोह और दुःख का कारण है।
(ग) यह कारण इच्छा अथवा वासना है।
(घ) इच्छा अथवा वासना का दमन करके दुःखों की समाप्ति सम्भव है।

गौतम बुद्ध के उपरोक्त उपदेशों को ही चार 'आर्य सत्य' कहा जाता है। प्राणी मात्र की हिंसा न करना, चोरी न करना, व्याभिचार न करना, असत्य न बोलना तथा नशीली वस्तुओं का सेवन न करना ही मानवता का सर्वोत्तम धर्म है। गौतम बुद्ध ने उपरोक्त आचरणों को ही 'पंचशील' कहा है। ज्ञानार्जन के उपरान्त गौतम बुद्ध सारनाथ गए, जहां उन्होंने भिक्षुओं को वासना रहित जीवन का उपदेश दिया। उन्होंने बताया कि अनर्थों से उत्पन्न दुःखों से अपने आपको य परख ज्ञान से सुशोभित किया था, वहीं अपनी

मातृभूमि पर खड़ा भारत, विश्व के सभी राष्ट्रों में स्वाभिमान का प्रतीक बना। उन्होंने अपने शिष्यों को उपदेश दिया कि जीवन पर्यन्त ऐसे धर्म की पुष्टि करो जो मानव मात्र के लिए कल्याणकारी हो। यही कारण था कि गौतम बुद्ध संसार के ऐसे महापुरूषों में जाने गए जिन्होंने जनमानस के समक्ष अमिट छाप प्रस्तुत की।

दुःखी महसूस करना व्यर्थ है। गौतम बुद्ध के इन उपदेशों को ''धर्म प्रवर्तन प्रवचन'' कहा जाता है। गौतम बुद्ध ने जहां भारतीय इतिहास को सत्य परख ज्ञान से सुशोभित किया था, वहीं अपनी मातृभूमि पर खड़ा भारत, विश्व के सभी राष्ट्रों में स्वाभिमान का प्रतीक बना। उन्होंने अपने शिष्यों को उपदेश दिया कि जीवन पर्यन्त ऐसे धर्म की पुष्टि करो जो मानव मात्र के लिए कल्याणकारी हो। यही कारण था कि गौतम बुद्ध संसार के ऐसे महापुरूषों में जाने गए जिन्होंने जनमानस के समक्ष अमिट छाप प्रस्तुत की।

तत्कालीन वैदिक कर्मकाण्डों में फंसी हुई बहुसंख्यक जनता को गौतम बुद्ध के समानता, बन्धुत्व, न्याय एवं बौद्धिक स्वतंत्रता पर आधारित धर्म से अत्यधिक चेतना प्राप्त हुई, क्योंकि उनका धर्म सवर्ण मानसिकता–अस्पृश्यता, हिंसा, असमानता तथा रूढ़ियों के विरूद्ध था। बुद्ध का आदेश था कि प्रशस्त आचरणों का पालन करने से विद्या का विनाश सम्भव है। अविद्या के विनाश से ज्ञान स्फुटित होना सम्भव होगा, और ज्ञान से मानव जीवन सांसारिक बाधाओं से पृथक होकर मुक्ति फल प्राप्त करने में समर्थ होगा। उन्होंने बताया कि वैदिक अथवा योग परम्परा के अन्तर्गत यज्ञ, जप–तप और उग्र तप करना निरर्थक है। बुद्ध ने ईश्वर वाद को कभी मान्यता नहीं दी। उन्होंने स्पष्ट किया कि यदि ईश्वर जगत का उपादान कारण है तो यह जगत ईश्वर का रूपान्तर है, और जगत में जितनी भी व्याधियां–दुःख, बुराई, पाप, क्रूरता आदि भी ईश्वरकृत समझना चाहिए। इस प्रकार ईश्वर सुखमय के विपरीत दुखमय अधिक हुआ यदि ईश्वर को सृष्टि कर्ता माना जाय तो उसे प्रत्यक्ष होना चाहिए किन्तु ऐसा नहीं है। इसलिए ईश्वर की मान्यता मात्र कल्पना है। गौतम बुद्ध ने आत्मा को अनित्य तथा किसी भी धर्मग्रंथ को स्वतः प्रमाणिकता प्रदान नहीं की। इसके अतिरिक्त उन्होंने मानस जीवन को प्राप्त देह तक ही सार्थक माना। यही कारण था कि सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य ने 'बहुजन हिताय'। बहुजन सुखाय।" को अपने संविधान का सर्वोच्च सूत्र स्वीकार किया था। सम्राट मौर्य शासन काल में गौतम बुद्ध के वैज्ञानिकता पर खरे उतरे ज्ञान को प्राप्त करने के लिए देश–विदेशों के शिक्षार्थी तक्षशिला, विक्रमशिला, नालन्दा और पाटिली पुत्र के विश्व विद्यालयों में आते थे।

सम्राट चन्द्रगुप्त के उपरान्त सम्राट अशोक ने बुद्ध धर्म की शिक्षाओं को अनेक राष्ट्रो में प्रचारित किया। यही कारण है कि गौतम बुद्ध की शिक्षाओं से भारत के अलावा चीन, कोरिया, जापान, तिब्बत, नेपाल, लंका, वर्मा, थाईलैण्ड, वियतनाम तथा इण्डोनेसिया आदि राष्ट्रों ने भी विज्ञान, संगीत, शिल्प धातु आदि कला क्षेत्रों में आशातीत सफलता प्राप्त की। महामानव बुद्ध ने भारत में प्रचलित आर्यों की रूढ़ियों, स्वर्ग–नरक भाग्य–भगवान, जन्म–पुर्नजन्म तथा वर्ण ानव धर्म नहीं, बल्कि दया, परोपकार, अहिंसा, प्रेम के द्वारा जन मानस की सेवा करना सच्ची मानवता है। गौतम बुद्ध ने मनु द्वारा प्रतिपादित वर्ण व्यवस्था को छल–प्रपंच, कपट, द्वेष, ईर्ष्या, पाखण्ड और अन्याय की जननी बताया। बुद्ध धर्म की शिक्षाओं से प्रभावित होकर जहां, सवर्णों ने पशु बलि का त्याग किया, वहीं हजारों वर्षों से दुःखी, भ्रमित, शोषित, अशिक्षित तथा अछूत सामाजिक को अपना उत्थान स्वयं करने की शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने जाति एवं धर्म के नाम पर विभाजित जन मानस को अनेकता, विरोध, संघर्ष और आपसी बैर–भाव से हटाकर भाईचारे समन्वय, प्रेमालाप करने का अवसर प्रदान किया। मानव हितोपदेशेक बुद्ध ने जन कल्याण के लिए पैतालीस वर्ष तक मानस सत्य का प्रचार–प्रसार किया। उनके सत्य परख ज्ञान को प्राप्त कर अनेक प्राणी बुद्धिमान बनने का अवसर प्राप्त किए जिनमें डा. अम्बेडकर सर्वोपरि मानव थे।

व्यवस्था को मानव शोषण का साधन बताया। उन्होंने ब्राह्मणों एवं सम्बन्धित सवर्ण सामाज को बताया कि ढोंग, आडम्बर और भय की चेष्टा द्वारा मानवता को कष्ट पहुंचाना मानव धर्म नहीं, बल्कि दया, परोपकार, अहिंसा, प्रेम के द्वारा जन मानस की सेवा करना सच्ची मानवता है। गौतम बुद्ध ने मनु द्वारा प्रतिपादित वर्ण व्यवस्था को छल–प्रपंच, कपट, द्वेष, ईर्ष्या, पाखण्ड और अन्याय की जननी बताया। बुद्ध धर्म की शिक्षाओं से प्रभावित होकर जहां, सवर्णों ने पशु बलि का त्याग किया, वहीं हजारों वर्षों से दुःखी, भ्रमित, शोषित, अशिक्षित तथा अछूत सामाजिक को अपना उत्थान स्वयं करने की शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने जाति एवं धर्म के नाम पर विभाजित जन मानस को अनेकता, विरोध, संघर्ष और आपसी बैर–भाव से हटाकर भाईचारे समन्वय, प्रेमालाप करने का अवसर प्रदान किया। मानव हितोपदेशेक बुद्ध ने जन कल्याण के लिए पैतालीस वर्ष तक मानस सत्य का प्रचार–प्रसार किया। उनके सत्य परख ज्ञान को प्राप्त कर अनेक प्राणी बुद्धिमान बनने का अवसर प्राप्त किए जिनमें डा. अम्बेडकर सर्वोपरि मानव थे।

भारतीय संविधान, भारतीय मुद्रा, राष्ट्र ध्वज में वर्तमान धम्म प्रवर्तन चक्र, पंचशील युक्त नीतियां, राष्ट्रपति के आवास स्थान का आकार तथा राष्ट्रपति सिंहासन के पीछे अंकित प्रतिमा आदि बुद्ध धर्म की कला, संस्कृति, आचरण, धर्मनिष्ठा की मिशाल तथा बुद्ध धर्म के आधार शिल्प है। उन्होंने अपने जीवन के अस्सी वर्ष तक सामाजिक विकृतियों से समझौता नहीं किया। गौतम बुद्ध ने अशिक्षित एवं शोषित अछूत जनता को उपदेश दिया शिक्षित बनो। स्वयं ऊपर उठो और अपने मार्ग का अन्वेषण स्वयं करो। गौतम बुद्ध ने मानस जीवन सार तत्वों को आठ "आष्टांगिक मार्गों" में क्रम बद्ध किया जिनका विवरण निम्न प्रकार है–

सम्यक दृष्टि : इस मार्ग के अन्तर्गत गौतम बुद्ध ने बताया कि जो वस्तु जैसी है उसे उसी भांति देखना चाहिए अर्थात् मानव दृष्टि में मोह, काम आदि कुविचार या दृष्टि विकार न हो।

सम्यक संकल्प : काम, क्रोध, लोभ और मोह आदि क्रूर कर्मों से मुक्त होने के लिए सदैव पवित्र चिन्तन करने का संकल्प लेना चाहिए ।

सम्यक वाचन : सम्यक वाचन के अनुसार विचारों की शुद्धता रखते हुए सदा सत्य बोलना चाहिए ।

सम्यक कर्मान्त : मानव प्राणी को ऐसे कर्म करने चाहिए जिससे अन्य प्राणियों को किसी प्रकार का कष्ट न हो।

सम्यक आजीविका : यह मार्ग हमें बताता है कि प्रत्येक मनुष्य स्वाजिविका पालन हेतु बुरे कर्म न करें। अपनी नेक कमाई से परिवारजनों के अतिरिक्त आगन्तुकों का भी सत्कार करना चाहिए ।

सम्यक व्यायाम : तन और मन से नियमित सद्गुणों को ग्रहण करें अर्थात् मनुष्य को सदा विवेकी बनने का व्यायाम कराना चाहिए ।

सम्यक स्मृति : के अन्तर्गत दैनिक सद्गुरु ध्यान, भजन एवं सत्संग द्वारा स्व स्मृति को आजीवन बनायें रखें।

सम्यक समाधि : सम्यक समाधि के लिए चंचल मन की गति को सांसारिक विषमताओं से हटाकर जीवन मुक्ति हेतु अपने इष्ट का ध्यान करना चाहिए ।

बाबा साहब डा. अम्बेडकर द्वारा लिखित ग्रन्थ ''बुद्ध या कार्लमार्क्स' में बुद्ध दर्शन के चतुर्थ भाग में पारमिताओं का सिद्धांत प्रतिष्ठित कर मानस जीवन के दैनिक सद्गुणों का बखान किया है जिनका विवरण निम्न प्रकार है –

1. ज्ञान : ज्ञान अथवा बुद्धि वह प्रकाश है जो अविद्या से उत्पन्न मोह तथा अज्ञान रूपी अंधकार को हटाती है। ज्ञान का अभिप्रायः है कि मानव विवेकपूर्ण प्राणियों से सत्य–असत्य का निर्णय कर भ्रम को दूर करें ।

2. शील : शील स्वाभाव होना मानव मात्र का नैतिक आचरण है अर्थात् लज्जा, भय तथा दण्ड प्रक्रिया से बचने के लिए कुशल कर्म करना अपनी प्रवृत्ति का आधार बनाना चाहिए ।

3. त्याग : मानव मात्र के क्षणिक सांसारिक सुखों का त्याग कर सच्चे सुख की प्राप्ति के लिए सत्कर्म करना चाहिए ।

4. दान : तन, मन और यथा सम्भव धन से दूसरों की सहायता करना, किन्तु बदले में कोई इच्छा न रखना।

5. सम्यक प्रयत्न : अपनी पूर्ण शक्ति लगा कर उस कार्य को पूरा करना जिसका दायित्व सौंपा गया है।

6. शांति : मानव सहनशीलता ही शांति का परम आधार है।

7. सत्य : जो वस्तु जैसी है, जिस रूप में उपस्थित है, वह अपने आप में सत्य है।

8. दृढ़ संकल्प : अपने पूर्ण लक्ष्य तक पहुँचने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञावन बनें ।

9. मित्रता : सभी प्राणियों (मानव, शत्रु, पशु–पक्षी आदि) के प्रति मित्रता की भावना रखना। किसी भी प्राणी से वैर–भाव न रखना ही सच्ची मित्रता है।

10. विरक्ति : मानव मन की वह अवस्था जहाँ आसक्ति अथवा अनासक्ति का भाव अथवा विचार न हो ।

उपरोक्त कारणों से स्पष्ट होता है कि प्रज्ञा महामानव गौतम बुद्ध के अन्तःकरण में व्याप्त थी। उनका दर्शन तथा निर्णायक सत्याचरण हमें मानवता की रक्षा के हितार्थ सदा संदेश देते रहेंगे। महामानव गौतम बुद्ध आजीवन ज्ञान रश्मि द्वारा समाज सेवा करते हुए 81 वर्ष की आयु में ''काशीनगर मे निर्वाण पद प्राप्त किए ।

एन. एस. सुमन नई दिल्ली

साभार : बहुजन संगठक नई दिल्ली

15 से 21 मई 2000 वर्ष 20 अंक 14

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

समस्या सुलझाना और शक्तिशाली निर्णय लेना

आप जितने योग्य हैं, उतना कमाने के लिए आपको लगातार अपने काम में और दूसरों के लिए मूल्य को लगातार बढ़ाते रहना चाहिए। हर क्षेत्र में लीडर्स और प्रभावी लोगों की सबसे महत्तपूर्ण योग्यताओं या गुणों में से एक यह है कि उनमें समस्याओं को सुलझाने और अच्छे निर्णय लेने की योग्यता होती है, जो ज्यादा और बेहतर परिणामों की ओर ले जाते हैं।

पूरा जीवन समस्याओं की एक श्रंखला है, जिन्हे सुलझाया जाना है या मुश्किलों का एक सिलसिला है, जिनसे उबरना है। अपने स्तर पर जिन समस्याओं से आपका आमना–सामना होता है, उन्हें सुलझाने की आपकी योग्यता इस बात के लिए बहुत अनिवार्य है कि आपको ज्यादा भुगतान मिले और ज्यादा तेजी से प्रमोशन मिले। सफलता समस्याएँ सुलझाने की योग्यता है। नेतृत्व समस्याएँ सुलझाने की योग्यता है। समस्याएँ सुलझाने का सच्चा पुरस्कार यह है कि आपको सुलझाने के लिए ज्यादा बड़ी समस्याएँ मिलती हैं।

समाधानों पर ध्यान केंद्रित करें

आपका जीवन और कामकाज समस्याओं की एक सतत श्रृंखला है। आपके सामने एक के बाद एक समस्या आएगी, दिन में भी और रात में भी। वास्तव में, जहाँ कोई समस्याएँ नहीं हैं, वहाँ काम स्वचालित है और किसी मशीन द्वारा किया जाता है। जितनी ज्यादा छुटपुट समस्याएँ स्वचालित होती हैं, आप ज्यादा जटिलता वाली समस्याओं को सुलझाने में उतने ही ज्यादा महत्वपूर्ण और मूल्यवान बनेंगे।

समस्याओं के इस सतत प्रवाह में एकमात्र बाधा कभी–कभार के संकट से उत्पन्न होगी। यदि आप एक सामान्य जीवन जी रहे हैं, तो हर दो–तीन महीनों में आपके सामने एक संकट होगा। अवश्यंभावी और अपरिहार्य संकटों से प्रभावी ढंग से निबटने की आपकी योग्यता आपके चरित्र और आपकी सक्षमता का प्रमुख पैमाना है।

भविष्य पर ध्यान केंद्रित करें

समाधान केंद्रित लोग किसी भी संगठन में सबसे मूल्यवान होते हैं। आप अपने विचारों को समस्या के बजाय समाधान पर केंद्रित करके अपनी मानसिकता एक ही पल में नकरात्मक से सकारात्मक में बदल सकते हैं। किसने क्या किया और दोष किसे देना है, यह पूछने या चिंता करने के बजाय आपको यह पूछना चाहिए, अब हम क्या करें?

आप समाधान खोजने पर जितना ज्यादा ध्यान केंद्रित करते हैं, उतने ही ज्यादा समाधान खोज लेते हैं। आप समस्याएँ सुलझाने में जितने बेहतर बनते हैं, आपको सुलझाने के लिए उतनी ही ज्यादा बड़ी समस्याएँ दी जाएँगी। आपको समस्याओं के बड़े आकार के अनुरूप ही ज्यादा पैसा, शक्ति और पदनाम भी दिया जाएगा। दरअसल, आपका पूरा जीवन और करियर उन समस्याओं को सुलझाने की आपकी योग्यता से तय होगा, जिनका सामना आप अपने स्तर पर करते हैं। एक खास स्तर की समस्याएँ सुलझाने के बाद आप अपने आप ज्यादा ऊँचे स्तर पर पहुँच जाते हैं, ठीक उसी तरह जिस तरह कि पिछले ग्रेड की परीक्षाएँ पास करने के बाद आप स्कूल में ज्यादा ऊँचे ग्रेड में पहुँच जाते हैं।

समस्याओं को सुनियोजित तरीके से सुलझाएँ

यहाँ सात कदमों की एक विधि है, जिसका इस्तेमाल करके आप अपने करियर की राह में आने वाली किसी भी समस्या से प्रभावी ढंग से निबट सकते हैं।

पहला कदम : समस्या को स्पष्टता से परिभाषित कर लें। समस्या सटीकता से है क्या? तथ्य जुटाएँ। असल तथ्य जुटाएँ। स्पष्ट या नजर आने वाले तथ्य नहीं, बल्कि स्थिति के असल तथ्य। यह आश्चर्यजनक है कि समस्याएँ सुलझाने की कोशिश में कितना ज्याद समय और ऊर्जा बर्बाद होती है, जब शामिल लोगों को यह भी स्पष्ट नहीं पता होता कि समस्या दरअसल है क्या।

दूसरा कदम : पूछें कि इस समस्या के सभी संभावित कारण क्या है। यह कैसे और क्यों खड़ी हुई? कई बार केवल इसी से समाधान सूझ जाएगा।

तीसरा कदम : पूछें कि सभी संभावित समाधान क्या हैं? आप जितने ज्यादा संभव समाधान सोच सकते हैं, इस बात की उतनी ही ज्यादा संभावना है कि आप आदर्श समाधान को खोज लेंगे।

चौथा कदम : एक निर्णय लें। आम तौर पर कोई भी निर्णय अनिर्णय से बेहतर होता है।

पाँचवाँ कदम : निर्णय पर अमल करने की जिम्मेदारी सौंपें। कौन सटीकता से क्या, कब और किन पैमानों के अनुरूप करने जा रहा हैं?

छठा कदम : रिपोर्टिंग की समयसारणी बनाएँ और यह मापने के लिए एक पैमाना तय करें कि निर्णय सफल रहा या नहीं। पैमाने या डेडलाइन के बिना कोई भी समाधान दरअसल समाधान नहीं है।

सातवाँ कदम : समाधान पर अम्ल करने और समस्या को सुलझाने के लिए निश्चित कदम उठाने का काम खुद लें या किसी दूसरे को सौंपे।

जीवन और कामकाज के प्रति समाधान–केंद्रित नीति अपनाएँ। ऐसे व्यक्ति बनें, जिसके पास लोग अपनी समस्याएँ इसलिए लेकर आएँ, क्योंकि आपसे पास हमेशा उन्हें सुलझाने का कोई अच्छा विचार रहता है। आप समाधानों पर जितने केंद्रित बनते हैं, आप उतने ही ज्यादा चतुर बनते हैं और आप उतने ही बेहतर समाधान सुझाते हैं। जो लोग समस्या सुलझाने में सबसे अच्छे होते हैं, उन्हें किसी भी संगठन में सबसे ज्यादा पैसे मिलते हैं और सबसे तेज प्रमोशन मिलता है।

सबसे शक्तिशाली कंप्यूटर

कल्पना करें कि किसी ने आपको एक आसान लेकिन शक्तिशाली कंप्यूटर दिया, जिसमें किसी भी सवाल का जवाब देने या आपके सामने आने वाली किसी भी समस्या को सुलझाने की शक्ति हो। आपको तो बस कंप्यूटर में उस समस्या की उचित प्रोग्रामिंग भर करनी है। फिर ठीक समय पर यह आपको सटीकता से जवाब दे देगा, जिसकी आपको जरूरत है। जवाब आपके लिए हमेशा सही और आदर्श होगा।

सच्चाई यह है कि आपके पास पहले से ही ऐसा कंप्यूटर है और यह आपके कानों के ठीक बीच में लगा हुआ है। बेहद प्रभावी लोगों और अपने परिणामों से नाखुश लोगों के बीच इकलौता असली फर्क यह है कि वे इस अद्भुत कंप्यूटर का किस सीमा तक इस्तेमाल करते हैं। अद्भुत खोज यह है कि आप नियमित रूप से इसका इस्तेमाल करना आसानी से सीख सकते हैं। ऐसा करने पर आपको बेहतर निर्णय और बेहतर परिणाम का लाभ तुरंत ही मिलने लगेगा।

यह अद्भुत कंप्यूटर कैसे काम करता है, यह समझने के लिए आइए आपके मस्तिष्क का अध्ययन शुरू करते हैं। आपका मस्तिष्क दो गोलार्धों में बँटा हुआ है, जिन्हें आम तौर पर दायाँ मस्तिष्क और बायाँ मस्तिष्क कहा जाता है। वृहद शोध से पता चलता है कि मस्तिष्क का हर हिस्सा निश्चित कार्यों के लिए उत्तरदायी होता है।

एक मस्तिष्क में दो मस्तिष्क

आपका बायाँ मस्तिष्क रेखीय, क्रमिक, व्यवस्थित और गणितीय कार्यों के लिए जिम्मेदार होता है। यह व्यावहारिक, विश्लेषणात्मक और संदेहवादी होता है। मस्तिष्क का यह हिस्सा श्रेणियों और मूर्त चीजों से ताल्लुक रखता है। आपका बायाँ मस्तिष्क शाब्दिक, आंकिक और वैज्ञानिक चीजों से ताल्लुक रखता है। यह मस्तिक का इंजीनियरिंग वाला हिस्सा है और यह मूलतः कदम–दर–कदम तरीके से तथ्यों की प्रोसेसिंग करने पर केंद्रित होता है।

दूसरी ओर, आपका दायाँ मस्तिष्क बहुत अलग होता है। यह समग्रतावादी और सहज होता है। जहाँ आपका बायाँ मस्तिष्क व्यक्तिगत विवरणों से ताल्लुक रखता है, वहीं आपका दायाँ मस्तिष्क पूर्ण तसवीरों और पूरी तरह एकीकृत विचारों व स्थितियों से संबंध रखता है। आपका दायाँ मस्तिष्क आपकी सृजनात्मक, सांगीतिक और कलात्मक योग्यताओं का भी प्रभारी होता है। यह नृत्य, गायन और हँसी के लिए जिम्मेदार होता है। आपका दायाँ मस्तिष्क सोचने, महसूस करने, समस्या सुलझाने और निर्णय लेने की सहज बोध वाली प्रक्रियाओं के लिए उत्तरदायी होता है।

अपनी पूरी संभावना का ताला खोलें

जब आप इन दोनों मस्तिष्कों के कार्यसंचालन को इस तरह सामंजस्य में लाना सीखते हैं, ताकि वे सहयोग में काम करें, तो आप असाधारण स्तर पर प्रदर्शन शुरू करते हैं। स्त्री–पुरूष अपनी पूरी संभावनाओं का ताला खोलने लगते हैं, जब वे दाएँ मस्तिष्क की अद्भुत क्षमताओं का उपयोग करते हैं, खास तौर पर महत्तपूर्ण निर्णय लेने में।

सहज बोध का निर्णय भीतर से आपके पास आता है। यह हमेशा तथ्यों और विवरणों पर विचार करके लिए गए निर्णय से श्रेष्ठ होता है। सहज बोध वाला निर्णय किसी विषय संबंधी आपके समूचे ज्ञान को एकीकृत करके आपको सही जवाब देता है। सहज बोध का यह जवाब हर उस चीज से श्रेष्ठ होता है, जिसका निर्णय आप कदम–दर–कदम अंदाज में काम करते हुए ले सकते थे। इसीलिए जो स्त्री–पुरूष लगभग सभी संगठनों के शिखर पर होते हैं, उनमें बहुत सहज बोध होता है, जिससे वे समस्याएँ सुलझाते हैं और अपने तथा दूसरों के लिए निर्णय लेते हैं।

सहज बोध को अक्सर भीतर की धीमी आवाज कहा जाता है। आंतरिक आवाज एक सफल मार्गदर्शक या तंत्र जैसी है, जो हमेशा आपको सही चीज़ करने या कहने को कहती है। आप इस पर जितना ज्यादा भरोसा और विश्वास करते हैं, यह आपके लिए उतनी ही ज्यादा अच्छी तरह और सटीकता से काम करती है। आप चाहे जो करते हों, सहज बोध से निर्णय लेने वाली शक्तियों का इस्तेमाल करने की आपकी योग्यता आपके लगभग हर काम में आपकी सफलता और प्रभावकारी की भविष्यवाणी करती है।

चार मानसिक गुण

अपने सहज बोध को सक्रिय करने और नियमित रूप से अपने मन के ज्यादा ऊँचे स्तरों का दोहन करने के लिए आपमें चार खास मानसिक गुण होने चाहिए। पहला है पूर्ण विश्वास, अपने सहज बोध में बच्चे जैसी आस्था और अपने आंतरिक मन के साथ 6''प्रवाह में बहने'' की तत्परता। आपका सहज बोध प्रयासरहित तरीके से काम करता है। यह सबसे अच्छी तरह तब काम करता है, जब आप किसी चीज को करने की जीतोड़ कोशिश छोड़ देते हैं और इसके बजाय बस ढीला छोड़ देते हैं तथा जो भी समाधान आपके पास आता है, उसे स्वीकार कर लेते हैं।

दूसरा मानसिक गुण जो आपको अपने सहज बोध का अधिक कार्यकुशलता से इस्तेमाल करने में सक्षम बनाता है, वह है एक सकारात्मक मानसिक नजरिया। इससे मेरा मतलब है कि आप परिणामों के बारे में शांत, तनावरहित और खुशमिजाज बने रहते हैं। सकारात्मक मानसिक नजरिये का वर्णन ''तनाव और विपत्ति पर एक सृजनात्मक प्रतिक्रिया'' के रूप में किया गया है। जब आप तनावरहित, आरामदेह तरीके से प्रतिक्रिया करते हैं, तो आप एक ऐसा मानसिक वातावरण बना देते हैं, जो आपके मस्तिष्क को इसके सर्वश्रेष्ठ रूप में कार्य करने में सक्षम बनाता है और यही आपके सहज बोध को प्रेरित करता है।

सर्वश्रेष्ठ की उम्मीद करें

आपके सहज बोध को बढ़ाने वाला तीसरा मानसिक गुण है विश्वास से भरी अपेक्षा का नजरिया। आप जितने ज्यादा सकारात्मक और विश्वास से भरे होते हैं, आपका सहज बोध और समाधान उतने ही ज्यादा पैन तथा तीव्र

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।

बनेंगे। यह विश्वास और उम्मीद रखने की आदत डालें कि आपके लिए चीजें अच्छी तरह होगी।

हर मुश्किल और विपत्ति में मूल्यवाद सबक की तलाश करें। आप जिस भी विपत्ति या बाधा का सामना करें, हर एक में लाभ खोजें। अपनी स्थिति के अच्छे हिस्सों पर अपने मस्तिष्क को एकाग्र रखने का सचेतन निर्णय लें और नकारात्मक हिस्सों पर ध्यान देने से इंकार कर दें। इससे आपका मस्तिष्क इतना सक्षम बन जाएगा कि यह आपके लक्ष्य हासिल करने में मदद करने के लिए अपने सर्वश्रेष्ठ स्तर पर काम करने लगेगा।

सहज बोध से निर्णय लेने के लिए चौथा मानसिक गुण सुनना है। महिलाएँ पुरूषों के मुकाबले सहज बोध की बात सुनने में कहीं बेहतर होती हैं। शायद इसीलिए महिलाओं के सहज बोध को पुरूषों के मुकाबले ज्यादा सम्मान मिलता है। बहरहाल, पुरूषों और महिलाओं में सहज बोध की एक जैसी काबिलियत होती है। उन्हे तो बस यह सुनना है, जो उनकी यह काबिलियत उन्हें समय–समय पर बताती है। जीवन में हमारी ज्यादातर गलतियाँ अपने सहज बोध को नजरअंदाज करने या इसकी बात न सुनने से होती हैं, क्योंकि हम सोचते हैं कि ऐसा करना हमारे लिए बेहतर होगा। यह हमेशा एक गलती साबित होती है।

सहज बोध का इस्तेमाल करने की तीन जगहें

तीन क्षेत्र हैं, जहाँ आप अपने सहज बोध का इस्तेमाल लगातार बेहतर निर्णय लेने और महँगी गलतियो से बचने के लिए कर सकते हैं।

1. व्यक्तिगत संबंध : चाहे संबंध आपके जीवनसाथी या बच्चे या मित्र के साथ हो, आपका सहज बोध आपको करने या कहने के लिए हमेशा सही चीज बताएगा। आपको तो बस किसी स्थिति में यह करना चाहिए कि अपने सहज बोध को धीरे से चालू कर दें और सुनें, और फिर वही कहें या करें, जो सबसे सही और स्वाभाविक नजर आता है।

मेरे अनुभव में, संबंधों में समस्याओं का एक बड़ा कारण यह है कि एक या दोनों पक्ष अपने सहज बोध को नजर अंदाज कर रहे हैं और इसकी बात सुनने या इस पर काम करने से इंकार कर रहे हैं। लोग संबंधों के अंदर–बाहर होते हैं या दूसरों के साथ अपने व्यवहार में निर्णय लेते हैं, जबकि वे गहराई में जानते हैं कि वे गलत चीज कर रहे हैं। अगर आप कभी अपनी ''अंदरूनी भावना'' या सहज बोध के खिलाफ जाएँ, तो आप लगभग हमेशा एक ऐसी समस्या खड़ी कर देंगे, जो उसके मुकाबले ज्यादा बड़ी और निबटने में ज्यादा मुश्किल होती है, जितनी कि सहज बोध की बात मानने पर नहीं होती।

2. पेशेवर संबंध : अगर आप अपनी आंतरिक धीमी आवाज सुनते हैं, तो आपको हमेशा हर व्यावसयिक स्थिति में एक भावना का अहसास होगा कि क्या करना या नहीं करना है।

अगर आप बिक्री के क्षेत्र में हैं, तो किसी प्रॉस्पेक्ट या ग्राहक के साथ होते समय आप पूरी तरह अपने सहज बोध पर भरोसा कर सकते हैं कि यह आपको बता देगा कि क्या करना और क्या कहना है। जब आप इसका अनुसरण करते हैं, तो आप हमेशा पाएँगे कि यह आपको सही चीजो की ओर ले जा रहा है। कई सेल्सपीपुल ने मुझे बताया है कि एक सेल्स इंटरव्यू में उनके मन में अचानक एक खास विषय पर बात छेड़ने की भावना जागी। बाद में उन्होंने पाया कि उन्होंने सही समय पर सही बात कही थी। सभी शीर्षस्थ सेल्सपीपुल अमूमन अपने सहज बोध पर भरोसा करते हैं और अपने बिक्री के काम में लगातार इसकी बात सुनते हैं।

3. चुनाव करना : चाहे आप संवाद कर रहे हों या सौदेबाजी या खदीदना–बेचना या कोई नौकरी स्वीकार कर रहे हों या छोड़ रहे हों, आप हमेशा किसी न किसी तरह पर चुनाव कर रहे हैं। इनमें से कुछ चुनाव महत्वपूर्ण नहीं होते, लेनिक कई के गंभीर दीर्घकालीन परिणाम हो सकते हैं।

किसी नौकरी को स्वीकार करना, वेतन की सौदेबाजी या किसी खास समय किसी खास कंपनी के लिए काम करने जाने का आपके जीवन की पूरी दिशा पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ सकता है। धन के निवेश, व्यय या ऋध्स का कारण चाहे जो हो, उसके महत्वपूर्ण दीर्घकालीन परिणाम हो सकते हैं। जिस भी निर्णय के परिणाम निर्णय लेने के काफी समय बाद तक चलें, वह इस तरह का निर्णय है, जिसमें अपको सहज बोध की अपनी अद्भुत शक्तियों की मदद लेनी चाहिए।

अपनी शक्तियाँ बढ़ाएँ

सौभाग्य से कुछ निश्चित कदम उठाकर आप अपने सहज बोध की मानकिस शक्तियों को बढ़ा सकते हैं। आप वर्तमान समय में जिस समस्या या स्थिति से निबट रहे हैं, उसे चुनकर आप शुरूआत कर सकते हैं। फिर आप नीचे दिए कदम उठाकर अपने मानकिस कंप्यूटर में उसकी प्रोग्रामिंग कर सकते हैं।

सबसे पहले, अपनी समस्या को स्पष्ट रूप से, लिखित में परिभाषित करें। अगर सवाल अपने आप में उलझा हुआ और अस्पष्ट हो, तो आपका मस्तिष्क सही जवाब खोजकर लाने का काम नहीं कर सकता। सटीकता से समस्या क्या है? यह समस्या क्यों है? क्या यह छिपे वेश में अवसर हो सकती है? क्या यह एक ही समस्या है या समस्या–समूह है– एक ऐसी समस्या जो कई छोटी–छोटी समस्याओं से मिलकर बनी है? यह जो भी हो, इसके बारे में सोचने में कुछ समय लगाएँ और स्पष्टता से कागज पर वर्णन करें, ताकि आप सटीकता से जान जाएँ कि आपका पाला किससे पड़ रहा है। यह सहज बोध की प्रक्रिया की शुरूआत है।

एक बार जब आपको समस्या का स्पष्ट आभास हो जाए, तो खुद से पूछें, ''और कौन सी चीज समस्या है?'' आप किसी वास्तविक समस्या से निबट रहे हैं या फिर आप किसी ज्यादा गहरी समस्या के लक्षण से ही निबट रहे हैं? कई लोग किसी कामकाजी समस्या या संबंध की समस्या को सुलझाने की कोशिश करते हैं, लेकिन उन्हें यह अहसास ही नहीं होता कि असली समस्या यह है कि वे पूरी तरह से गलत नौकरी या संबंध में हैं।

एक पुरानी कहावत है, ''एक कीमत होती है, जो आप किसी समस्या से आजाद होने के लिए चुका सकते हैं और आप हमेशा जानते हैं कि वह कीमत क्या है।'' आपका सहज बोध आपको बता देगा कि करने के लिए सही चीज क्या है, हालाँकि हो सकता है कि सही चीज आसान या आरामदेह न हो। जो भी हो, आपको अपना दिमाग खुला रखना चाहिए।

जानकारी इकट्ठी करें

एक बार जब अपनी समस्या को स्पष्टता से परिपाषित कर लें, तो फिर समस्या पर शोध करें, पढ़ें और जानकारी एकत्रित करें। क्या आपसे पहले यह समस्या किसी दूसरे के सामने आई हैं? उसने इस बारे में क्या किया? पहिए का आविष्कार दोबारा करने की कोशिश न करें। कई बार एक छोटा –सा शोध आपको ठीक वही जवाब दे देगा, जिसकी आप तलाश कर रहे हैं। गूगल या विकीपीडिया को आजमाकर देखें।

कई महीनों से ज्यूरिक, स्विट्जरलैंड में आईबीएम रिसर्च लैबोरेट्रीज के दो वैज्ञानिक सुपरकंडक्टिविटी की समस्याओं पर गहनता से काम कर रहे थे। वे जानते थे कि वे किस चीज की तलाश में थे, लेकिन वे कोई प्रगति नहीं कर पा रहे थे, इसलिए उन्होंने थोड़ा आराम करने के बाद समस्या से जूझने का निर्णय लिया।

ब्रेक के दौरान एक वैज्ञानिक कंपनी की लाइब्रेरी में गया और सिरोमिक्स पर एक फ्रेंच जर्नल को उलटने–पलटने लगा। एक लेख में एक नए सिरेमिक एप्लिकेशन के बारे में बताया गया था, जिसे उसी समय विकसित किया गया था। यह ठीक वही चीज थी, जिसकी वैज्ञानिक को तलाश थी। यह तुरंत उस लेख को प्रयोगशाला ले गया और वहाँ वर्णित सिद्धांत को लागू करके उसने और उसके साथी ने सुपरकंडक्टिविटी का रहस्य खोज लिया। यह इतनी महत्त्वपूर्ण वैज्ञानिक खोज थी कि इन दोनों आदमियों को अगले साल भौतिकी का नोबेल पुरस्कार मिला।

सलाह माँगें

एक बार जब आप अपनी समस्या को स्पष्टता से परिभाषित कर लें और इस पर यथासंभव अच्छा शोध कर लें, तो उन लोगों से बात करें, जिनके पास आपकी मनचाही जानकारी हो सकती है। यह आश्चर्यजनक है कि आप दूसरों से सवाल पूछने भर से ही कितना कुछ सीख सकते हैं, जिन्हें कमोबेश वैसे ही अनुभव हुए हों। यदि आप पर्याप्त लोगों से पूछते हैं, तो आप अक्सर पाते हैं कि आपको जानकारी देने वाले किसी भी एक व्यक्ति को जितनी जानकारी है, बहुत से लोगों से जानकारी प्राप्त करने की वजह से आपके पास उससे बेहतर जानकारी आ चुकी है।

मेरा एक मित्र प्रबंधन परामर्शदाता है। उसे एक बड़ी कंपनी ने एक खास तरह के रियल इस्टेट निवेश में बड़ी राशि लगाने के औचित्य की जाँच करने के लिए नियुक्त किया। कंपनी के एक्जीक्यूटिव्ज ने उससे राष्ट्रीय स्तर पर मूल्यांकन करके सलाह देने को कहा कि किस दिशा में जाना चाहिए।

सबसे पहले तो वह इंटरनेट पर गया और उसने उस क्षेत्र से संबंधित कुछ लेख डाउनलोड किए, जो पिछले कुछ महीनों में लिखे गए थे। लेख पढ़ने के बाद उसने कुछ लोगों और कंपनियों को फोन किया, जिनका जिक्र उन लेखों में था। उसने उन्हें बताया कि वह इस उद्योग में एक बड़ी राशि निवेश करने के बारे में सोच रहा है। उसने उनसे उनके बारे में जानकारी, विचार और सलाह माँगी।

बहुत से लोगों से बार करें

अगले कुछ दिनों तक उसने देश के अलग–अलग हिस्सों के लगभग तीस लोगों से बात की, जो सभी उस खास उद्योग में विशेषज्ञता रखते थे। उनमें से ज्यादातर उसे चाही गई जानकारी देने के लिए तैयार थे। कई बार तो उन्होंने जानकारी ई–मेल से भेजी, कभी–कभार तो फेडेक्स से भी–क्योंकि वे उसे एक संभावित निवेशक के रूप में देखते थे।

जब तक उसने अपनी तहकीकात पूरी की, तब तक वह अमेरिका में इस विषय पर सबसे जानकार लोगों में से एक बन गया था। फिर उसने अपने निष्कर्षों और अनुशंसाओं का सार एक विस्तृत रिपोर्ट में लिखकर अपने ग्राहक के सामने पेश कर दिया। साथ ही उसने परामर्शदाता सेवाओं के लिए 50,000 डॉलर का बिल भी थमा दिया। ग्राहक ने रिपोर्ट पढ़कर बिल का खुशी–खुशी भुगतान कर दिया। मेरा परामर्शदाता मित्र अपने अगले काम पर चल दिया।

सोचने की आपकी योग्यता

आपकी सबसे मूल्यवान संपत्तियों में से एक है आपकी सोचने की योग्यता और अपने मस्तिष्ट को परिणाम पाने की ओर लगाना। दूसरे सफल लोग अपनी मानसिक क्षमताओं से जो करते हैं, अगर आप भी उन्हीं को करने में अपनी मानसिक क्षमताओं का जितना ज्यादा उपयोग करते हैं, तो आप ज्यादा सफल और समृद्ध होंगे तथा अच्छी चीजें आपके जीवन में ज्यादा तेजी से आएँगी।

आइए मान लेते हैं कि अब आपने अपनी समस्या से स्पष्टता से परिभाषित कर लिया है, अच्छी तरह पढ़ लिया है और शोध कर लिया है, दूसरों से उनकी सलाह और राय माँग ली है, और समस्या या स्थिति का हर विवरण लिख लिया है।

एक बार जब आप विवरण लिख लें, तो उन्हें कई बार पढ़ें। अपने मस्तिष्क को उन्हें सोखने दें, ताकि आपके दाएँ मस्तिष्क को उचित ईधन मिल सके और यह सारे तथ्यों को समन्वित व एकीकृत कर सके और सहज बोध से प्रतिक्रिया कर सके। किसी समस्या या अवसर के सारे विवरण लिखने का कार्य ही प्रायः सहज बोध की खोजों को प्रेरित कर देता है, जो उन विचारों और समाधानों की ओर ले जाती है, जो वर्तमान विचारों व समाधानों से श्रेष्ठ होते हैं।

हर समस्या पर विचारमंथन का अभ्यास करें

अगर आपके पास अब भी कोई समाधान नहीं है, तो आपका कदम खुद को विवश करना है – खुद को अनुशासित करना है – कि आप बीस तरीके लिखें, जिनसे समस्या को सुलझाया जा सकता है। एक पेज के ऊपर इस तरह का सवाल लिखकर शुरू करें, मैं/हम इस समस्या को कैसे सुलझा सकते हैं या इस लक्ष्य को कैसे हासिल कर सकते हैं?

फिर जल्दी से बीस समाधान या बीस जवाब या बीस कार्य दिशाएँ लिखें, जो संभव हो सकती है। आप चाहें तो

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

इससे ज्यादा लिख सकते हैं, लेकिन इस अभ्यास के लिए बीस न्यूनतम है। अक्सर बीसवें जवाब में ही वह खोज होती है, जिसकी आप तलाश कर रहे थे। खुद को इस तरह सोचने के लिए विवश करने से आपका सहज बोध सक्रिय हो जाएगा और आपके पास वह जवाब ले आएगा, जो स्थिति को आदर्श तरीके से सुलझा देगा।

आगे के करियर में जब भी आपके सामने कोई बड़ी चुनौती, समस्या या लक्ष्य हो, तो इसे सवाल के रूप में एक पेज के ऊपर लिख लें और फिर इसके कम से कम बीस जवाब उत्पन्न करने के लिए खुद को अनुशासित करें। यह अकेला अभ्यास आपका जीवन बदल सकता है। यह आपकी बुद्धि में बिजली दौड़ा देगा। यह आपके सृजनात्मक मस्तिष्क को सक्रिय कर देगा, ताकि यह दिन भर ज्यादा ऊँचे स्तर पर कार्य करे। दरअसल यह आपको ज्यादा चतुर बना देगा और आपके आईक्यू को बढ़ा देगा। विचारमंथन का नियमित अभ्यास करके आप अपने मस्तिष्क को पहले से ज्यादा शक्तिशाली, ज्यादा तेज और ज्यादा लचीला बनाते हैं। बस इसे एक बार आजमाकर देखें। आप हैरान रह जाएँगे।

इसके बारे में भूल जाएँ

अगर आपने पिछले कदमों का अनुसरण कर लिया है, लेकिन फिर भी अब तक संतोषजनक समाधान नहीं मिल पाया है, तो सहज बोध से निर्णय लेने में अगला कदम उठाएँ, जिसे चिंतन या प्रमस्तिष्क क्रिया कहा जाता है। इसका अर्थ है कि आप सारी जानकारी अपने अवचेतन मन में डाल दें और फिर कुछ समय तक इसके बारे में भूल जाएँ। अपने मन को किसी दूसरी चीज में पूरी तरह लगा दें। हालाँकि आप किसी दूसरी चीज को करने में व्यस्त हैं, लेकिन इस दौरान आपका मन अवचेतन रूप से समस्या को सुलझाने के लिए काम कर रहा है।

जब लोग समस्या सुलझाने या निर्णय लेने के मामले में एक अंधी गली में पहुँच जाते हैं, तो कई लोग इसे मददगार पाते हैं कि वे पूरा मसला अपने अवचेतन मन के हवाले कर दें और बस जवाब के लिए ''पूछें।'' यह करने का अच्छा समय सोने से ठीक पहले का होता है। कई बार आप सुबह जागेंगे और जवाब पूरी तरह आपके दिमाग में उभर आएगा। दूसरे मामलों में, जब आप अपना मन दूसरे विषयों पर केंद्रित रखतेहैं, तो जवाब एक निश्चित बिंदु पर पूरी तरह प्रकट हो जाएगा और आप सटीकता से जान जाएँगे कि क्या करना है।

सहज बोध के निर्णय हो पहचानना

आप किसी सहज बोध वाले निर्णय को कैसे पहचानें? आपको कैसे पता कि यह निर्णय या समाधान भविष्य में ज्यादा बड़ी समस्याओं की ओर नहीं ले जाएगा? देखिए, चार सूचक हैं, जो सहज बोध पर आधारित हर समाधान या निर्णय के साथ आते हैं।

सबसे पहले, अगर जवाब सचमुच आपके सहज बोध से उत्पन्न हुआ है, तो यह हर विवरण में पूर्ण होगा, समस्या के हर पहलू का जवाब देगा, शुरू से अंत तक। समाधान सारे विवरणों को एकीकृत करेगा और सभी चिंताओं को हल कर देगा।

दूसरे, सहज बोध वाला समाधान इतना सरल नजर आता है कि आप हैरान होते हैं कि आपने इसके बारे में पहले क्यों नहीं सोचा। यह स्पष्टता की चकाचौंध करने वाली चमक जैसा महसूस होता है। आप सोचते हैं कि यह कितना आदर्श है और आपके मन में यह भावना होती है कि यह सारे समय आपकी नाक के नीचे पड़ा था।

किसी सहज बोध वाले निर्णय का तीसरा सूचक यह है कि आवश्यक काम चाहे जो हों, पूरी तरह से आपकी क्षमताओं और संसाधनों के भीतर होते हैं। समाधान कोई ऐसी चीज होगा, जो आप इसी समय कर सकते हैं, जो आपके पास है उससे कर सकते हैं, जहाँ हैं वहीं कर सकते हैं। आप इस पर तुरंत काम कर सकते हैं।

यह समाधान आपके सहज बोध से आया है, इसका चौथा सूचक यह है कि जवाब के साथ खुशी और ऊर्जा का एक ज्वार भी साथ आता है। उल्लास का एक भाव आता है, जो आपको रोमांचित कर देता है। आप समाधान पर अमल करने के लिए उत्सुक होंगे।

सहज बोध से समस्या सुलझाना और निर्णय लेना आपके भविष्य की कुंजी है। यह शायद आपके मस्तिष्क की सबसे प्रबल शक्ति है। आपकी सहज बोध की योग्यताओं का नियमित इस्तेमाल उन्हें बेहतर, ज्यादा मजबूत और ज्यादा पैना बनाएगा, जब तक कि आप उस बिंदु तक नहीं पहुँच जाते, जहाँ आपको यकीन होता है कि दरअसल ऐसा कुछ नहीं है, जो आप नहीं कर सकते, बशर्ते आप उस ओर दिमाग लगाएँ। आप शायद सही होंगे।

कार्य अभ्यास

1. उस सबसे बड़ी समस्या या बाधा को पहचानें, जो आपको अपना सबसे महत्त्वपूर्ण लक्ष्य हासिल करने से रोक रही है। इसे लिख लें।
2. इस समस्या का कारण तय करें। क्या कारण हो सकता है?
3. सभी संभावित समाधानों को पहचानें। क्या समाधान हो सकता है?
4. अगर आपको अब भी समाधान नहीं सूझता है, तो समस्या या लक्ष्य पर विचारमंथन का अभ्यास करें और बीस संभव समाधान या जवाब लिख लें।
5. जानकारी एकत्रित करें। दूसरे लोगों से पूछें। इंटरनेट पर जवाब खोजें। जो भी पढ़ सकते हों, हर चीज पढ़ें।
6. अगर आपको अब भी आदर्श जवाब नहीं मिला है, तो अपने सहज बोध पर भरोसा करें। समस्या को अपने अवचेतन मन के हवाले कर दें और कोई दूसरी चीज करने में व्यस्त हो जाएँ।
7. अंततः जब जवाब आपके पास आए, तो तुरंत कदम उठाएँ।

साभार :
अपनी योग्यता के अनुरूप कमाएँ।
पेज संख्या 173 से 187 तक
ब्रायन ट्रेसी

कुल्लू

यह एक पर्वतीय स्थल है। यहां पहाड़ी पर एक ओर एक मेखलादेवी का मन्दिर है। और सामने शिखर पर बिजली महादेव का मंदिर है। ब्राह्मण पंडों ने यह विश्वास फैला रखा है कि वर्षा और घटाओं में शिवजी के लिंग पर बिजली गिरती है और वह छीर–छीर हो जाता है और एकान्त में मक्खन से पुनः जोड़ते हैं और वह पुनः यथा पूर्व शक्ल में आ जाता है। इस अंधविश्वास के सहारे पंडों ने यहां की जनता को खूब ठगा है। बिजली के समय पंडे शिवजी के लिंग टूटने की घोषणा कर देते हैं और यह घोषणा करते ही हजारों आदमी उमड़ पड़ता है जो लाखों रूपया भक्ती बस दान में चढ़ौना चढ़ा जाता है और लिंग भगवान से पर संकट एवं क्रोध निवारण की प्रार्थना करता है। मनो मक्खन इकट्ठा हो जाता है जिसे पंडे अपने घरों में ले जाते हैं। यहां सरवरी नदी के ऊपर रघुनाथ जी का मन्दिर है। ये रघुनाथ जी यहां अधिष्ठाता देव माने जाते हैं। जिनके ये दशहरा के देव शिरोमणि है। कुलू से 21 किमी. दूर नगर का किला है। नगर किले के पास ही त्रिपुर सुन्दरी गौरीशंकर शिव आदि के मन्दिर बहुत दर्शनीय हैं। कुछ ऊपर ठाहबा में मुरली मनोहर मन्दिर है। मनाली से 5 किमी दूर जगत मुख का मन्दिर है, यहां एक शिव का मन्दिर है और एक संख्या गायत्री का मन्दिर है।

पहाड़ी जनता बहुत गरीब है। आय और उद्योग के साधन नहीं है इसलिए गरीब लोग मैदानी भागों में जीविका के लिए खिसक आते हैं फिर भी अनेकों लोग भूख से मर जाते हैं। यहां के वैभव का दूसरा दृश्य ये मन्दिर है। यहां का आदमी बहुत अंधविश्वासी है। इन मन्दिरों के भण्डार सोने चांदी से भरे हुए हैं। हजारों टन मेवा, सेव, फल की सामग्री चढ़ौनी चढ़ती है जिसे पंडे खा जाते हैं। यहां घोर अंध विश्वास व्याप्त है। यहां प्रमुख दो धार्मिक कृत्य किए जाते हैं। एक दशहरा दूसरा है रथ यात्रा। दशहरा सात दिन तक चलता है। दशहरे पर स्वछंद नाँच और भोगलिंगनचलता है यदि कोई पुरूष किसी स्त्री को जबरन भी भोगले तो वह क्षम्य है क्योंकि यह देव की इच्छा मानी जाती है। ऐसे अनेको केस होते हैं। रथ यात्रा में भगवान की मूर्ति निकाली जाती है इस मूर्ति के रथ के नीचे दब कर लोग जान दे देते हैं और यह विश्वास किया जाता है कि भगवान के रथ के नीचे मरने वाला स्वर्ग में चला जाता है। ऐसा वीभत्य धार्मिक पर्व किसी धर्म या संस्कृति में नहीं मिलता है जो हिन्दुओं में है। रथ चलते समय लाखों रूपए का धन फेंक दिया जाता है जो इकट्ठा कर ब्राह्मण पंडों के निमित्त चला जाता है। यह नाच रंग सात दिन तक चलता है।

इन मन्दिरों में महिला पुजारिनी भी मिलती हैं जो पंडों की रखैल होती हैं और कभी–कभी यात्रियों की वासना तृप्त करती हैं।

यहाँ पहाड़ी परिवारों में पैसा देकर ठहरा जा सकता है और भारी यात्रा में लोग पेइंग गेस्ट के रूप में ठहरते हैं और कभी–कभी वहां की किसी लकड़ी से साठ–गाँइ हो जाती है जो गेस्ट महोदय ये करते है और शवाव लूटते रहत हैं। ये गेस्ट का काम पंडे पुजारी करते हैं और अपनी कन्याओं के बल पर खूब कमाते हैं। यह व्यभचार खुले रूप में चलता है। वैसे यात्रियों के ठहरने के लिए वहां ब्राह्मणों ने धर्मशालाएं और होटल बना रखे हैं। जहां ठहरने वाले यात्री को शराब और सुन्दरी दोनों उपलब्ध कराते हैं। शराब का चलन इतना है कि मन्दिरों में सामान उठाने वाले हर कुली की पेन्ट में शराब की बोतल दबी रहती है और यात्री के माँगने पर तुरन्त थमा देते हैं। यहाँ अनेकों अधं भक्त और अनेकों विलासी भोगी आते रहते है। अनेकों शराब पीकर मन्दिर में घुसते हैं और शराब पीकर मन्दिर में ही छेड़–छाड़ करते हैं।

लकड़ी और रूद्राक्ष की मालाएँ हर मन्दिर पर स्त्रियाँ बेचती मिलेगी जो मालाएँ तो बेचती ही है पुरूष को पटाने का काम भी करती हैं। यहां भिखारियों की कतारें लगती है। ये पहाड़ी मन्दिर व्यभचार के अड्डे, पेशेवर, भिखारी, ठग, जेबकतरे लगा रखते हैं जिनसे कमीशन पर अपराध कराते हैं। यहां अनेक मन्दिर हैं जिनमें पशु एवं नर बलि दी जाती है। जितने प्रकार के पाप कर्म हो सकते है वे सब इन धर्म स्थानों पर हो रहे हैं।

साभार :
हिन्दुओं के व्रत, पर्व और त्यौहार
एस. एल. सागर

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।

डॉक्टर अम्बेकर का राइट ऑनरेबल श्री.ए.वी. एलेक्जेंडर, सदस्य, केबीनेट मिशन को पत्र

दिनांक 14 मार्च 1946

प्रिय श्री एलेक्जेंडर,

यह दुःख की बात है कि काग्रेंस और लीग के बीच समझौता कराने में आपके प्रयत्न असफल हो गए हैं। मैं समझता हूं कि आप सहानुभूति और कृतज्ञता को देखकर मुझे एक वृद्ध बनिए की बात याद आ गई है। उस बनिए का कोई बेटा नहीं था जो उसकी सम्पत्ति का वारिस हो सके, अतः उसने एक युवा लड़की से विवाह कर लिया और यह आशा की कि उसकी सन्तान ही उसकी सम्पत्ति की वारिश बन जाएगीं उस वधु ने गर्भधारण कर लिया परन्तु वह भयंकर रोग में फंस गया। किन्तु उसने शिशु को देखे बिना मरने से इनकार कर दिया पर वह सन्तान के जन्म तक प्रतीक्षा नहीं कर सकता था क्योंकि उसमें अभी देर थी। वह बहुत अमीर था, अतः उसने डॉक्टर को बुला लिया और डॉक्टर से कहा कि वह उसकी पत्नी का पेट चीर दे और देखे कि गर्भ में लड़का है अथवा लड़की। इसका परिणाम यह हुआ कि शिशु और उसकी माता दोनों की मृत्यु हो गयी। मुझे लगता है कि मिशन बहुत कुछ करना चाहता था, जैसा कि बनिए ने किया था। आप इस तथ्य से अवगत नहीं होंगे कि मेरे समान अनेक ऐसे व्यक्ति हैं जो यह महसूस करते हैं कि मिशन सन्तानोत्पत्ति की स्वाभाविक अवधि से पूर्व ही बलात शिशु जन्म कराने में व्यस्त है।

2. मेरी समक्ष से केवल यह कहना ठीक है कि आज हिन्दू और मुसलमान दोनों ही मानसिक रूप से अक्षम हैं कि इस देश के भाग्य का निर्णय क्या किया जाए। हिन्दू और मुसलमान दोनों ही भीड़ की तरह हैं। यह बात आपके अनुभव की होगी कि भीड़ सामूहिक सहभागिता के आवेग से अधिक और पदार्थगत लाभ से कम प्रभावित होती है। यह अधिक सरल है कि लोगों के बड़े समूह को बलिदान के लिए फुसला लिया जाए। भीड़ सरलता से हित और अहित से समक्ष खो बैठती है। वह संवेगों से आन्दोलित होती है जो ऊंचे अथवा नीचे हो सकते हैं, जो दयालु अथवा निर्दयी हो सकते हैं; परन्तु वह सदा तर्क से परे या नीचे होती है। प्रत्येक की सामान्य समक्ष सभी के संवेग में खो जाती है। भीड़ को पैतृक संपत्ति स्वीकार करने अपेक्षा आत्महत्या करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकना सरल है। यह मेरे लिए ठीक नहीं है कि मैं आपको परामर्श दूं। मिशन ने भंगी बस्ती और 10 औरंगजेब रोड से अधिक बुद्धि और उच्च प्रेरणा प्राप्त की है। मैं इस बुद्धिमत्ता तथा प्रेरणा के मूल्य से संबंध में एक शब्द भी नहीं कहूंगा। परन्तु मैं यह अवश्य सोचता हूं कि मिशन को शीघ्रता में वृद्ध व्यक्ति के दुःखद दृश्य जैसा प्रर्दशन नहीं करना था, जैसा कि चैम्बरलेन ने एक बार आयरिश होम रूल के आन्दोलक ग्लेडस्टोन के बारे में कहा था। राजनीति में जिसे 'प्रशीतन अवधि' कहते हैं उससे समस्याओं से निपटना आसान हो जाता है।

3. पर यह बात तो मिशन, बड़ी पार्टियों और उन लोंगो के लिए हैं जिन्होंने बड़ी पार्टियों में अपना विश्वास रखा है। मैं केवल यह जानने के लिए उत्सुक हूं कि आप अछूतों की समस्या का किस प्रकार समाधान करना चाहते हैं तथा उनकी संवैधानिक सुरक्षा की मांग को किस प्रकार पूरा करना चाहते हैं। मिशन ने शिमला विचार–विमर्श के अन्तिम दिन अधिकारिक वक्तव्य जारी किया और इस वक्तव्य में बताया गया कि मिशन दिल्ली लौट आने के बाद थोड़े ही दिनों में अगले कदम की घोषणा करेगा कि उसके क्या प्रस्ताव हैं। यह स्पष्ट है कि सभी अनुसूचित जातियों के लोगों की आंखे इस घोषणा की ओर लगी हुई है। मिशन क्या करेगा, इससे अंततोगत्वा उनमें भाग्य का निर्णय हो जाएगा। मिशन का निर्णय या तो उनकी मौत का कारण बन जाएगा। यह प्रश्न जीवन और मृत्यु का है। यह गलत नहीं होगा यदि मैं अछूतों की समस्या की ओर आपका ध्यान आकर्षित करूं।

4. अछूतों की समस्या का सामना करना अछूतों के लिए बड़ा विकट काम है। परन्तु सौभाग्यवश इसे समझना सरल होगा यदि केवल आगे दिए गए तथ्यों पर ध्यान दिया जाए। अछूत विशाल हिन्दू जन–समूह से घिरे हैं जो उनका विरोधी है और जिसे उनके साथ असमानता अथवा अत्याचार करने में लज्जा नहीं आती। ऐसे अन्यायों को दूर करने के लिए जो विरूद्ध प्रतिदिन होते हैं अछूतों को प्रशासन की सहायता चाहिए। इस प्रशासन की प्रकृति और गठन क्या होगा? सारांश में यह कहा जा सकता है कि भारत में प्रशासन पूर्णतया हिन्दुओं के हाथ में है। इस पर उनका एकाधिकार है। ऊपर से लेकर नीचे तक शासन नियंत्रण हिन्दुओं के हाथ में है। कोई भी ऐसा विभाग नहीं है जहां हिन्दुओं का अधिपत्य न हो। उनका अधिपत्य पुलिस, न्यायपालिका और राजस्व सेवाओं पर है और वास्तव में प्रशासन की प्रत्येक शाखा पर हिन्दुओं का अधिपत्य है। दूसरी बात याद रखने की यह है कि प्रशासन क्षेत्र में हिन्दू न केवल समाज–विरोधी हैं, अपितु निश्चित रूप से अछूतों के प्रति शत्रुपूर्ण हैं। उनका उद्देश्य है कि अछूतों से भेदभाव रखा जाए तथा उन्हें कानून का सहारा भी न प्राप्त हो। इसका परिणाम यह है कि अछूत हिन्दू जनसंख्या तथा हिन्दू बाहुल्य प्रशासन के बीच फंसे हैं। एक यदि दूसरे के विरूद्ध गलत काम करता है तो दूसरा उसे अभियोगी बनाने की अपेक्षा गलती करने वालक की रक्षा करता है।

5. इस पृष्टभूमि को देखते हुए, कांग्रेस के स्वराज का अछूतों के लिए क्या अर्थ है? इसका एक ही अर्थ है, अर्थात आज तो केवल प्रशासन हिन्दुओं के हाथ में है पर स्वराज के बाद विधान सभा और कार्यपालिका में भी हिन्दुओं का ही प्रभुत्व हो जाएगा। यह निर्विवाद सत्य है कि स्वराज से अछूतों के दुःख बढ़ेंगे। अछूतों को विरोधी प्रशासन का ही सामना नहीं करना पड़ेगा अपितु उन्हें विरोधी अथवा उदासीन विधान–मंडल, निष्ठुर कार्यपालिका और एक ऐसे अनियंत्रित तथा बेलगाम प्रशासन का सामना करना पड़ेगा जो अछूतों की ओर कठोर, विषाक्त और अन्यायपूर्ण भावना रखेगा। यदि इस बात को पतन की नियति से बचाने का कोई उपाय नहीं है जो हिन्दुओं और हिन्दूवाद ने उनके लिए निर्धारित की है।

6. मेरा विश्वास है कि इससे आपको कुछ अनुमान हो जाएगा कि अछूत क्यों केवल ऐसे मार्ग पर जोर दे रहे हैं जिसके द्वारा वे स्वराज से आने वाले अत्याचार का शिकार न बनें और इसलिए वे चाहते हैं कि उन्हें विधानमण्डल में अपना प्रतिनिधित्व मिले ताकि वे हिन्दुओं द्वारा की गई गलतियों और अन्याय का सामना कर सकें। वे कार्यपालिका में अपना प्रतिनिधित्व चाहते हैं ताकि प्रशासन पूर्ण रूप से उनका विरोध न कर सके। यदि आप संवैधानिक सुरक्षाओं के लिए अछूतों की मांग का न्याय स्वीकार करते हैं तो आपको यह समझने में कठिनाई नहीं होगी कि अछूत अपने लिए अलग प्रतिनिधित्व क्यों चाहते हैं। अछूत विधानमंडल में अल्पसंख्यक होंगे। उनकी नियति में अल्पसंख्यक ही रहना है। वे बहुसंख्यक को जीत नहीं सकते क्योंकि बहुसंख्यक अपनी रचना में साम्प्रदायिक हैं, कहना चाहिए कि वे स्थिर और पूर्व–निर्धारित हैं। अल्पसंख्यक यही कर सकते हैं कि वे अपने को ऐसी स्थिति में डालें कि ऐसी शर्तो के सुनिश्चित करने योग्य हो सकें जिन पर वे बहुसंख्यकों के साथ काम कर सकें। और उन पर इस बात का दबाव नहीं डाला जाए कि वे बहुसंख्यकों द्वारा प्रस्तावित शर्तो को स्वीकार करें। दूसरे यदि बहुसंख्यक उनके साथ काम करने से इनकार करें तथा अपनी भूलों को समाप्त करने पर राजी नहीं हों तो अल्पसंख्यकों को यह स्वतंत्रता होगी कि वे विधानमंडल में बहुसंख्यकों के प्रति अपना विरोध प्रकट करें। विरोध करने की अपनी प्रतिनिधि अपने चुनाव के लिए बहुसंख्यकों के मतों पर आश्रित न हों। अलग चुनाव–क्षेत्र के लिए उनकी मांग का यही आधार है।

7. अनुसूचित जातियों के लिए तब तक किन्हीं भी संरक्षणों का कोई मूल्य नहीं है जब तक कि उनके लिए अलग निर्वाचन–क्षेत्र न बनाए जाएं। अलग निर्वाचन–क्षेत्र इस मामले का निर्णायक कदम है। मेरे सामने उस प्रतिवेदन की एक प्रति है जिसे उन तीन कांग्रेसी हरिजनों ने केबिनेट मिशन को प्रस्तुत किया था और मिशन द्वारा 9 अप्रैल, 1946 को जिनका साक्षात्कार किया गया था। वे टूली स्ट्रीट के उन तीन दर्जियों से बेहतर नहीं थे जिन्होंने संसद को संबोधित करने का दुस्साहस करके कहा था, ''हम इंग्लैण्ड के नागरिक हैं।'' इसके अलावा यह ध्यान देने योग्य बात है कि अनुसूचित जातियों की फेडरेशन की ओर रखी गई मांगें और इन कांग्रेसी हरिजनों द्वारा रखी गई मांगों में कोई अन्तर नही हैं यदि कोई अन्तर नहीं है तो उसका संबंध निर्वाचन–क्षेत्रों के प्रश्न पर आधारित है। मैं यह नहीं जानता कि आपने कांग्रेस हरिजनों की मांगों की क्या व्यवस्था की है। वे वास्तविक मांगें नहीं हैं। वे मांगें इस बात की अभिव्यक्ति करती हैं कि राजनीतिक सुरक्षा के रूप में कांग्रेस अछूतों को क्या देने के लिए तैयार है। यह मेरी गजतफहमी नहीं है, यह मेरा ज्ञान है। मुझे ऐसे लोंगों से सूचना मिली है जो कांग्रेस की मन की बात समझते हैं कि यदि मैं संयुक्त–निर्वाचन क्षेत्रों को स्वीकार कर लू तो कांग्रेस अपनी ओर से मेरी अन्य मांगों को स्वीकार करने के लिए बिलकुल तैयार है। आप सोचते होगे कि कांग्रेस अनुसूचित जातियों की सभी मांगों को स्वीकार करने के लिए क्यों तैयार है, केवल एक मांग को छोड़कर अर्थात् अलग निर्वाचन क्षेत्र की मांग को छोड़कर। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी यदि आपको यह मालूम हो कि कांग्रेस क्या खेल रही है। यह बहुत गहरी चाल है। यह महसूस करते हुए कि अछूतों को कुछ सुरक्षाएं दिए बिना छुटकारा नहीं हो सकता, सरकार यह पता लगाना चाहती है कि ऐसे संयुक्त निर्वाचन–क्षेत्र की पद्धति में निहित है कि कांग्रेस ऐसा कानून लाना चाहती है कि सुरक्षाओं का कोई प्रभाव न हो। यही कारण है कि कांग्रेस संयुक्त निर्वाचन–क्षेत्रों पर जोर दे रही है। संयुक्त निर्वाचन–क्षेत्रों का यह अर्थ है कि अछूतों को शक्ति दिए बिना पद दिए जाएं। अछूत चाहते हैं कि उन्हें शक्ति के साथ पद मिलें। यह वे अलग निर्वाचन–क्षेत्रों से ही प्राप्त कर सकते हैं और यही कारण है कि वे इस बात के लिए जोर दे रहे हैं।

8. मुझें विश्वास हैं कि अनुसूचित जातियों के लिए अलग निर्वाचन–क्षेत्र के पक्ष का मामला सुदृढ़ है। कांग्रेस के सिवाय प्रत्येक पार्टी इस सुझाव को स्वीकार करती है। अलग निर्वाचन –क्षेत्रों के पक्ष में तर्क मेरे मार्च 1946 के उस पत्र में दिये गये जो लार्ड वेबल को भेजा गया और शायद उन्होंने यह पत्र आपको दिखाया हो। अतः उस पत्र को फिर दुहराना अनावश्यक है। प्रश्न यह है कि अनुसूचित जातियों की इस मांग के बारे में मिशन को क्या करना है? क्या मिशन अछूतों को हिन्दुओं की राजनीतिक बंधन से मुक्त करना चाहता है। अथवा वह संयुक्त निर्वाचन–क्षेत्रों की पद्धति द्वारा उन्हें भेंडयों के सामने डालना चाहता है ताकि वे कांग्रेस और उस हिन्दू बहुसंख्यक वर्ग के साथ भिन्नता कर सकें जिसके वे प्रतिनिधि कहे जाते हैं? अनुसूचित जातियां महामहिम की सरकार ब्रिटिश राज छोड़ने से पूर्व यह आश्वस्त करेगी

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।

कि स्वराज अछतों के लिए फांसी का फन्दा न बन जाए।

9. मुझे यह कहने की अनुमति दी जाए कि ब्रिटिश का अनुसूचित जातियों के प्रति नैतिक दायित्व है। सभी अल्पसंख्यक वर्गों के प्रति उनके नैतिक दायित्व हैं, परन्तु ये दायित्व कभी भी उस नैतिक दायित्व से आगे नहीं बढ़ सकते जो उन्हें अछूतों के संबन्ध में निभाना है। यह दुःख की बात है कि कुछ ब्रिटिश लोग ही इससे अवगत हैं और कितने कम लोग इसे निभाना चाहते हैं। भारत में ब्रिटिश शासन का अस्तित्व अछूतों द्वारा की गई सहायता पर निर्भर करता है। अनेक ब्रिटिश लोग यह सोचते हैं कि भारत पर विजय क्लाइव, हेस्टिंग्स, कूट्स और इसी प्रकार के अन्य सेनापतियों द्वारा हुई है। इससे अधिक गलती और नहीं हो सकती। भारत पर विजय भारतीयों की सेनाओं द्वारा हुई और जो भारतीय इस सेना में थे वे सभी अछूत थे। ब्रिटिश शासन भारत में कभी भी संभव न होता यदि अछूतों ने ब्रिटिश लोगों की भारत विजय पाने में सहायता न की होती। प्लासी के युद्ध को ही लीजिए। इस युद्ध से ब्रिटिश शासन का प्रारंभ हुआ या किर्की की लड़ाई को देखिए जिसने भारत पर विजय को पूरा कराया। इन दोनों भाग्य–निर्णायक लड़ाईयों में जो सैनिक ब्रिटिश के लिए लड़े, वे सभी अछूत थे।

10. ब्रिटिश ने उन अछूतों के लिए जो उनके लिए लड़े क्या किया? यह शर्मनाक कहानी है। सबसे पहला काम उन्होंने यह किया कि सेना में अछूतों की भर्ती रोक दी। इतिहास में इससे अधिक अकृतज्ञ और कठोर कार्य शायद ही मिले। सेना में अछूतों के लिए द्वार बन्द कर दिए जाने से ब्रिटिश ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि अछूतों ने ही उनके शासन को स्थापित कराने में सहायता की थी तथा उनकी उस समय रक्षा की थी जब 1857 में सैनिक बगावत के समय देशी बलों के सशक्त गठबंधन ब्रिटिश रात को हिला उठे थे। अछूतों पर पड़ने वाले प्रभावों पर विचार किए बिना ब्रिटिश ने एक बार में ही उनके जीवन यापन के स्रोत से उन्हें वंचित कर दिया और उन्हें अपने मूल पतन गर्त में झोंक दिया। क्या ब्रिटिश ने उनकी सहायता की कि वे किसी प्रकार अपनी स्वाभाविक असमानताओं को दूर कर सकें? इसका उत्तर भी नकारात्मक है। स्कूल, कुएं और सार्वजनिक स्थान अछूतों के लिए बन्द किए गए। पर ब्रिटिश का कर्त्तव्य था कि वे अछूतों को नागरिक के रूप में देखें और उन्हें सरकारी खर्च द्वारा चलाई जाने वाली संख्याओं में प्रवेश पाने के लिए अधिकारी बनाएं। परन्तु ब्रिटिश ने ऐसा कुछ भी नहीं किया, और सबसे खराब बात यह है कि उन्हें अपनी अकर्मण्यता को यह कहकर संगत ठहराया कि अस्पृस्यता उनकी देन नहीं है। यह हो सकता है कि अस्पृस्यता उनकी देन ना हो, किन्तु सरकार होने के नाते निश्चय ही अस्पृस्यता मिटा देने का उनका उत्तरदायित्व तो था। कोई भी सरकार जो अपने कृत्यों और कर्त्तव्यों के प्रति सजग है, इस असमानता को दूर करने के लिए बाध्य है। ब्रिटिश सरकार ने क्या किया? उसने ऐसे किसी प्रश्न को नहीं सुलझाया जिसका संबंध है, अछूतों ने ऐसी सरकार के अधीन स्वयं को पाया जिसके लिए उन्होंने कठोर परिश्रम किया और कष्ट सहे, जिए और मरे, परन्तु यह सब इतिहास में विलीन हो गया। राजनीतिक दृष्टि से , परिवर्तन साधारण था। हिन्दुओं की निरंकुशता पूर्ववत् बनी रही। ब्रिटिश हाई कमान द्वारा इसे कम किए जाने के बजाय, बढावा दिया गया। सामाजिक दृष्टिकोण से ब्रिटिश ने उसी व्यवस्था को स्वीकार कर लिया जो उन्हें मिली थी और चीन के उस दर्जी के तरीके के अनुसार उसे निष्ठापूर्वक सुरक्षित रखा जिसे जब एक पुराना कोट नमूने के तौर पर दिया गया तो उसने बड़े गर्व के साथ उस कोट जैसा हुबहू कोट बना दिया जिसमें पेंबंद और सभी कुछ ज्यों का त्यों लगे हुए थे। इसका परिणाम क्या हुआ? इसका परिणाम यह हुआ कि भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना हुए 200 वर्ष बीत गए हैं किन्तु अछूत, अछूत ही हैं। उनकी दुर्दशा को ठीक नहीं किया गया है और उनकी प्रगति के प्रत्येक चरण में रूकावट आई है। वास्तव में यदि ब्रिटिश शासन ने भारत में कुछ भी प्राप्त किया है तो उसने ब्राम्हणवाद को सशक्त किया और पुनः अनुप्राणित किया है। ब्राहम्ण अछूतों के घोर शत्रु हैं और वे ही सभी बुराईयों के जन्मदाता हैं। उन्हीं के कारण अछूतों कों वर्षो से यातना भुगतनी पड़ी हैं।

11. आप यहां यह घोषणा करने आए हैं कि ब्रिटिश लोग भारत पर सत्ता छोड़ रहे हैं इसमें कोई भूल नहीं होगी यदि अछूत यह पूछें कि ''आप किसे यह प्राधिकार और शक्ति सौंप रहे हैं?'' क्या आप ब्राहम्णवाद के पक्षपोषकों को यह भार सौंप रहें हैं, जिसका अर्थ यह हैं कि अछूतों के अत्याचारियों और दमनकारियों को यह सत्ता सौंप रहे हैं?'' भारत में ब्रिटिश साम्राज्य को समाप्त करने का यह तरीका अन्य पार्टियों के अंतःकरण को न छुए, परन्तु ब्रिटिश लेबर पार्टी के बारें में क्या कहा जाए? लेबर पार्टी अधिकारहीनों तथा दलितों के लिए खड़े होने का दावा करती हैं। यदि यह बात अपने मर्म में सही है, तो मुझे कोई संदेह नहीं कि यह भारत के करोड़ों अछूतों के साथ खड़ी होगी तथा अछूतों की स्थिति बचाए रखने के लिए आवश्यक सभी कुछ करेगी और ऐसे हाथो में शक्ति को हस्तांतरित किए जाने की अनुमति नहीं देगी जो अपने जीवन के दर्शन तथा धर्म के कारण शासन करने योग्य नहीं हैं और अछूतों के शत्रु हैं। अनुसूचित जातियों के प्रति लापरवाही के लिए ब्रिटिश की ओर से यह प्रायश्चित होगा क्योंकि वे सदैव ही अनुसूचित जातियों के न्यासधारी रहे हैं।

12. मैंने इतने विस्तार से अपने मन को हल्का किया है, परन्तु अछूतों ने संवैधानिक सुरक्षा का जो प्रश्न उठाया हैं, उसके प्रति मिशन के मौन से मेरे मन में चिन्ता पैदा हो गई है। जो आश्वासन महामहीम की साकार ने अछूतों तथा अल्पसंख्यकों को दिए हैं उनके प्रति मिशन मे रूख से मेरी चिंता और गहरी हो गई हैं इन आश्वासनों के संबंध में मिशन की प्रवृत्ति से लार्ड पामर्सटन की याद आती है जिन्होंने कहा था, ''हमारे कोई भी स्थाई शत्रु नहीं हैं, हमारे कोई भी स्थाई मित्र नहीं हैं। हमारे केवल स्थाई हित हैं।'' आप भलीभांति यह अनुमान लगा सकते हैं कि यह कैसी भयानक संभावना होगी जो आप अछूतों को देंगें यदि यह बात पैदा हो जाए कि मिशन पामर्सटन की उक्ति को अपना मार्गदर्शक तत्व मानता है। आप ग्रेट ब्रिटेन के अल्प–सुविधा–प्राप्त वर्ग से उभरे हैं और मुझे पूरा विश्वास है कि आप वह सब कुछ अवश्य करेंगें जिससे भारत के अल्प–सुविधा–प्राप्त 6 करोंड़ लोगों को संभावित विश्वासघात से बचाया जा सकें। यही कारण है कि मैंने उनके मामले को आपके समक्ष प्रस्तुत किया है। यदि आप यह कहने की मुझे अनुमति दें, तो मैं कहूगां कि अछूतों की यह भावना है कि इस मिशन में आपके सिवाय उनका कोई भी बड़ा मित्र नहीं हैं।

भवदीय
डॉ. बी. आर. अम्बेडकर

साभार
बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर
सम्पूर्ण वाङ्मय खण्ड–19
पृ.सं. 90 से 96 तक ,

खुजराहों

खुजराहों के मंदिर मूर्ति कला के सुन्दर नमूने हैं यहां 85 मन्दिरों का निर्माण हुआ था जिसमें 63 मंदिर खंडहर हो चुके हैं और 22 मन्दिर अभी बचे हैं। खुजराहों का कभी जलजला था वैभव था और विलासिता की जन्नत था। यहां कभी खुजराहों के मुख्य द्वार पर सोने के खजूर के दो विशाल वृक्ष सुशोभित थे। यह भारत ही है जहां धर्म के नाम पर एक ओर सोने के टनों भारी विशाल वृक्ष बनाए गए और दूसरी तरफ इन्हीं धर्म के ठेकेदारों ने भूखे पेट सूखे तन दासों को कोड़े मार मारकर दम टूटी उनकी लाशें चील, गिद्धों के लिए फेंक दी। खुजराहों के मंदिर हिन्दू भगवान, हिन्दू पुजारी, हिन्दु गुरू, हिन्दू महंत के चरित्र संस्कृति, भोग विलास, मैथुन की नग्नता की कहानी कहते हैं। ऐसा कभी न किसी संस्कृति में देखा गया न सुना गया। रति और मैथुन कीणाएं करती हुई मूर्तियां इन मंदिरों के भगवान के सिर पर सवार हैं जो यह प्रदर्शित करती है कि यह हिन्दुओं का भगवान कितना भोगी, विलासी और कामुक है।

खुजराहों के मन्दिर तीन समूहों में बंटे हुए हैं। पूर्वी मन्दिर समूह, पश्चिमी मंदिर समूह और दक्षिणी मंदिर समूह पश्चिमी मंदिर समूह में चौसठ योगिनी मन्दिर है। यह मन्दिर पूर्ण पत्थर का बना हुआ है। यहां काली का मन्दिर है। खुजराहो का कन्दरिया महादेव मंदिर अद्भुत मंदिर है। यहां एक जगदम्बा मंदिर है। यहां चित्रगुप्त मन्दिर है। इसके मध्य में 11 सिर वाले विष्णु की मूर्ति है। सूर्य को सात अश्वों वाले रथ को हांकते हुए दिखाया गया है। बाहर की दीवारों पर आकर्षक मूर्तियां बनी हुईं है। पार्वती मन्दिर में मगरमच्छ पर सवार गंगा की मूर्ति है। यहां एक लक्ष्मण मन्दिर है जिसमें विष्णु की मूर्ति है मंतगेश्वर एक प्रसिद्ध मंदिर है। ब्रह्मा मंदिर पत्थर का बना हुआ है। वामन मन्दिर की बाहरी दीवारों पर दो कतारों में मूर्तियां प्रमुख है। चतुर्भुज मन्दिर में विष्णु की एक सुन्दर मूर्ति है। बनावट और कला के हिसाब से खुजराहों के ये मंदिर सब 50 अरब रूपए मूल्य के हैं। एक–एक मंदिर एक–एक अरब से भी अधिक का है। इन मन्दिरों का निर्माण 100 वर्ष से भी अधिक समय में हुआ है सैकड़ों मन सोना, चांदी, हीरे पन्ना इन मंदिरों की सम्पत्ति है। इन मन्दिरों की कीमत इतनी अधिक है कि सारे भारत में अति दलित लोगों की सम्पत्ति भी इनसे कम है। खुजराहो के मन्दिर में लाखों रूपया प्रतिदिन की आय होती है। हजारों ब्राह्मण प्रतिदिन मन्दिरों में पल रहा है। इन मन्दिरों के सहारे ब्राह्मणों ने विलासता और वासना की दुकाने खोल रखी है। जुआ शराब के अड्डे बने हुए हैं। दिन में घंटा बजता है तो रात में पायलें बजती हैं। यह है इन मन्दिरों की कहानी। मंदिरों के ऊपर बने रतिक्रिया में लीन स्त्री–पुरूषों के चित्र समस्त हिन्दू जाति को संदेश देते प्रतीत होते हैं कि यही जिन्दगी है ऐसा लगता है कि मन्दिर कभी अमीरों के ऐशगाह रहे होंगे जहां कभी घुंघरूओं की रूनखुन होती रहती होगी।

साभार :
हिन्दुओं के व्रत, पर्व और त्यौहार
एस. एल. सागर

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।

रामराज्य की कल्पना अशोक के धम्म राज्य से

संस्कृत रामायण कर्ताओं को श्रीलंका के बारे में बिल्कुल जानकारी नहीं थी। इतना ही नहीं तो लंका से जाकर वापस आया कोई आदमी उनको नहीं मिला इन लेखकों को केवल इतना ही दिखाना था कि आठ सौ मिल समुद्र पार कर वैदिक लोग बौद्धों के पहले ही लंका गये थे। इस एक ही उद्देश से प्रेरित इन ब्राह्मणों की सोच ऐसी थी, जो वनस्पति उत्तर भारत में मिलती है, वही लंका में भी होगी। जो भाषा उत्तर भारत में बोली जाती है, वही लंका में बोली जाती होगी। इसके चलते दो हजार मिल के अंदर ही रामायण घटीत हुआ। यह बतानेवाले इन लेखको के रामायण के पात्रो को कभी भाषा की अडचन नहीं आयी। बंदर, गृध, रीस, मानव, यक्ष, और राक्षसनी कि भाषा संस्कृत। जो की वह किसी की भी मातृभाषा नहीं थी फिर भी सभी की है ऐसा आभास निर्माण किया।

बुद्ध के धम्म से ब्राह्मण धर्म पुराना है इसका विस्तार समुद्र पार द्वीपों पर हुआ था ऐसी धोखेबाजी करके स्थानिय जनतापर प्रभाव डालने के लिए झूठा रामायण रचा गया। अशोक ने लंका में धम्म प्रचारक भेजने से पहले वैदिकों ने वहाँ लष्करी विजय प्राप्त किया था। ऐसी डींगे हाकने के लिए यह संस्कृत रामायण लिखा। अशोक के जन कल्याणकारी राजसत्ता की प्रशंसा सर्वत्र हो रही थी। अशोक अपनी प्रजा को संतान मानता था। संतान समझकर प्रजा की देखभाल करने से यह काफी लोकप्रिय हुआ था। (केवल ब्राह्मणों को ही अशोक नहीं चाहिए था।) बुद्ध के धम्म का पालन करके लोकप्रिय हुए अशोक से ज्यादा वैदिकों के धर्म का पालन करने वाला राम भी इतना लोकप्रिय हुआ था कि, राम ने जलसमाधी लेते ही उसके अयोध्या के सभी प्रजा ने नदी में जान दी, ऐसी घटना घटी ऐसा लिखने से अशोक के राजसत्ता के लोकप्रियता को पर्याय के तौर ब्राह्मणों ने 'रामराज्य' का चित्र रेखांकित किया। मेरे इस प्रतिपादन को सपोट डॉ. रोमीला थापर ने लिखा ग्रंथ का जो अनुवाद डॉ. शरावती शिरगांवकर ने किया है। उनके आगे दिये गये विधान से पता चलता है – 'ऐसा वैभव एवं पवित्रता का काल मतलब आदर्श राज्य यह कल्पना इस समय (अशोक) के लोगों के मन में हमेशा थी। इसमें कोई दोराय नहीं। आगे के समय में रामराजा के कल्पना में वह संपूर्णता से स्पष्ट हुई। (मूल अंग्रेजी ग्रंथ का नाम Ashok And The Decline of Moury's)

मौर्य राजकर्ताओं की हत्या करके ब्राह्मणों ने साम्राज्य हथिया लिया, तब मौर्या को नालायक ठहराने की कोशिश ब्राह्मणों ने की। यह नालायकपन नैतिकता के बारे में सिद्ध करना ब्राह्मणों को संभव नहीं था। इसलिए मौर्या को पाखंडी करार देकर उनकी बदनामी की मुहिम ब्राह्मणों ने निकाली। वेद और यज्ञ को महत्व न देने वाला, तो पाखंडी ऐसी व्याख्या ब्राह्मणों ने की।

यज्ञ में इतना सामर्थ्य था की, बांझ महिला को भी यज्ञ के प्रभाव से बच्चा पैदा होता है। यक लोगों को बताने के लिए संस्कृत रामायण में दशरथ के पुत्र कामेष्ठी यज्ञ का झूठा वर्णन किया गया। इसी प्रकार के यज्ञ महानता की झूठे वर्णन लिखकर महाभारत और अन्य पुराण उस में जोडा गया। असंभव बातें संभव करने वाले दैवी शक्ति का यज्ञ अशोक ने नकारे वैसे ही मौर्य वंश में कोई भी राजा ने इसे स्वीकारा नहीं था। ब्राह्मण लोगों के अलावा कोई भी मूलनिवासी वेदों को एवं यज्ञ को भीख भी नहीं देता था। अंधविश्वासी लोग, ब्राह्मणों ने शिफारीश करने के बाद यज्ञ करा लेते थे। पर वे वैदिक धर्म का स्वीकार किया इसलिए नहीं तो भला हो, अपने उपर का संकट टले, इच्छा पूर्ती होने इन अपदायों से। अशोक ने बली देने पर प्रतिबंध लगाने वाला कानून बनाया था। इसका सबसे ज्यादा प्रभाव यज्ञ में दिये जाने वाले पशुबली देने वालें ब्राह्मणों को पड़ा वैसे ही वामाचार करने वाले संप्रदाय पर पड़ा पर वामाचारी या तांत्रिक संप्रदाय ने अशोक को पाखंडी नहीं ठहराया। ब्राह्मणों ने मात्र अश्वासूर कहकर गालियाँ दी। (महिषासूर, नरकासूर इस चाल पर अशोक का अश्वासूर) असूर यानी राक्षस ऐसा भी अर्थ मानकर अशोक को अश्वासूर कहा जो पुराणकारों ने गाली की तरह थी। रावण को तो सीधा–सीधा 'राक्षस' गाली दी और बुद्ध को 'चोर' गाली दी। बुद्ध को चोर कौन कहता है तो स्वंय राम।

पुराणों के कल्पना के अनुसार राम सातवा अवतार, यह राम त्रेता नाम के ब्राह्मण कल्पना के युग में हुआ। बुद्ध को पुराण ने नौवा अवतार माना। वह ब्राह्मण कल्पना के कली युग का, त्रेता युग का और कली युग के सारे साल मायनस किये तो त्रेता और कली के बीच का अंतर द्वापर युग के आठ लाख चौसष्ट हजार वर्ष बाकी रहते हैं। राम बुद्ध के पहले कम से कम आठ लाख चौसष्ट हजार वर्ष पूर्व हुआ ऐसे कहा जाये तो उसे फिर बुद्ध का अर्थ चोर यह कैसे पता चला?

यहाँ पर कोई कहेगा राम देव का अवतार था, इसलिए कलीयुग में उसके बाद दस, बारह लाख वर्षों से बुद्ध जन्म लेगें यह बात राम को पता थी, तो फिर आश्रम में सीता नहीं! यह देखकर राम हैरान क्यों हुआ? उसे रावण भगा ले गया और लंका में लाकर रख दिया यह बात उसके गुजरते दिनों के जीवन की अत्यंत व्याकूल करने वाली घटना उसे क्यों पता नहीं चली? इस प्रश्न के उत्तर यही है की, रामायण बुद्ध के बाद लिखा गया। बुद्ध के बाद ईसा पूर्व 187 तक जैन, आजीवक और बौद्ध नृपती की राजसत्ता थी और ब्राह्मणों की एक भी राजसत्ता नहीं थी। तब बुद्ध को गालियाँ देने का ढ़ाँढ़स ब्राह्मणों को क्यों नहीं हुआ?

ईसा पूर्व 187 में बौद्ध नृपती बृहदरथ मौर्य की पुष्यमित्र और अग्रिमित्र शुंग इन पिता पुत्रों ने हत्या करके साम्राज्य पर कब्जा करते ही ब्राह्मणों ने बुद्ध को गाली गलौच देने का ढ़ाँढस हुआ। इसलिए शुंग काल में रचे इस रामायण का राम कहता है ''यथैव चोर तथैव बुद्ध'' (जैसा चोर वैसे बुद्ध) कहने का तात्पर्य यह है कि, बुद्ध धम्म और अशोक का धम्म राज्य इनका महत्व नष्ट करने के लिए इस संस्कृत रामायण की रचना की गयी। ऐसी रचना करने के लिए अनुकूल वातावरण ईसा पूर्व दूसरी सदी और पहली का समय ब्राह्मण राजसत्ता थी बाद में ईसा पूर्व चौथी सदी के बाद गुप्त वंश राजसत्ता में रामायण अधिक ब्राह्मण समर्थक की बना।

साभार – प्रदूषित रामायण
पृष्ठ सं. 61 से 63
श्रीकांत शेटये

सेवा में,

नाम .....

पता .....

.....

.....

आपस में मिल जाओ

दलित शोषितों, सताये हुए लोगों, अब तो होश में आओ।
बच्चों के भविष्य के खातिर, आपस में मिल जाओ।।
जातिवाद के कारण से ही, पुरखे विघटित रहे सदा।
लड़–भिड़ मरते रहे आपस में, शोषण सहते रहे सदा।।
बाबा साहब समता लाये, पढ़ने का अधिकार दिया।
करो संगठित निज समाज को, नारा यह हुंकार दिया।।
जाति–पांति का भेद छोड़, सज्जनों को गले लगाओ। दलित..1
बहुत सुना कि बौद्ध धर्म में, सभी बराबर होते हैं।
मिट जाता है जाति भेद सब, बहुत प्रेम से रहते हैं।।
लेकिन भइया यू का किहिन्यो, जाति घुसायो बौद्ध धर्म में।
बौद्ध लड़ रहे दलितों जैसे, जाति–पांति के भेदन में।।
वही बुराई जातिवाद की, बौद्ध धर्म में मत ले जाओ। दलित..2
बौद्ध धर्म में जाति नहीं है, बनो बौद्ध उत्साह से।
खत्म जातियाँ हो नहिं सकती, अन्तर्जाति विवाह से।।
ऐसी बातें कहने वाले, निज समाज पथ भ्रष्टक हैं।
हरदम करें जाति में शादी, पक्के जाति समर्थक हैं।।
जिससे हो बिखराव खतम, तुम वही प्रथा अपनाओ। दलित...3
वर्ण के अन्दर शादी करना, वर्ण व्यवस्था कहलाती।
जाति के अन्दर शादी करना, जाति व्यवस्था कहलाती।
वर्ण में शादी से बनते अगड़े, सदा संगठित रहते हैं।
जाति में शादी से बनते शोषित, आपस में ही लड़ते हैं।।
शोषित जाति व्यवस्था छोड़ो, विघटन दूर भगाओ। दलित...4
बौद्ध धर्म का सरल तरीका, जातिवाद को छोड़ दो।
सामाजिक एकता के बल पर, दुर्दिन का मुख मोड़ दो।।
गांव शहर हर जगह पे भइया, अत्याचार रूकेगा।।
सारा अपराधी सुधरेगा, पश्चाताप करेगा।।
होगा पूरा देश बौद्धमय, अत्याचार भगाओ। दलित...5
धर्म वही जो करे संगठित, जाति व्यवस्था धर्म नहीं।
जाति व्यवस्था ही अधर्म है, बाँटे सदा समाज यही।।
जाति व्यवस्था ध्वस्त करें अब, अन्तर्जाति विवाह करें,
दलित भाइयों सब मिल करके, निज समाज संगठित करें।।
आत्मघाती जातिवाद है, इसे तुरन्त हटाओ। दलित 6
समर्थ समाज उद्देश्य हमारा, फिर कैसी मजबूरी है।
सामाजिक एकता ही रस्ता, चलना बहुत जरूरी है।।
रास्ता है तो बाधायें हैं, कु–प्रथाओं की झाड़ है।
बाधायें हैं तो हौसला है, क्योंकि मन में यह विश्वास है।।
कि, फाइटर हमेशा जीतता है, सबको यह बतलाओ। दलित...7
अन्तर्जातीय विवाह से ही, सामाजिक एकता सम्भव है।
सामाजिक एकता से ही, शोषण–मुक्ति सम्भव है।।

संकलनकर्ता
कमलेश (एडवोकेट)
लखनऊ, उ०प्र०

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।